

हिन्दी मासिक पत्रिका

ISSN 2581-8392

प्रकृति दर्शन

Nature and Environment Magazine

आई.एस.एस.एन. पंजीयन संख्या: 2581-8392 • आर एन आई पंजीयन संख्या: UPHIN/2018/76392 • वर्ष 6 • अंक 2 • अप्रैल 2026

**सफल सिंगापुर-जापान दौरा: हरित ऊर्जा को बढ़े हाथ
(ग्रीन हाइड्रोजन सेंटर ऑफ एक्सीलेंस की घोषणा)**

अंदर पेजों में खास-

- विश्व जलीय जीव दिवस 3 अप्रैल
- विश्व धरा दिवस 22 अप्रैल
- विश्व पेंगुइन दिवस 25 अप्रैल

website



SPONSORED BY : MSP FOUNDATION JHARKHAND



NEWSENSE

MARKETING SERVICES PRIVATE LIMITED

Consulting, Media, Education, Growth.

Make Your Newspaper Fast, Successful & Digital

RNI • News Website • 360° Digital Promotion



RNI • News Website 360° Digital Promotion

- ✓ **RNI / PRGI Registration** (Newspapers & Magazines)
- ✓ **Professional News Website Development & Management**
- ✓ **Best Digital Promotion** for Newspapers & Web Portals
- ✓ **Affordable Media Services**
Reach the world for less money



Solution-Oriented

Fast Registration & Website Setup



Proven Experience

Experts in News Media & Digital Marketing



Trusted & Reliable

Partnered with India's top newspapers, institutions & NGOs



Contact us now for fast, easy & affordable solutions!



+91 94112 29553



www.newsensepvtltd.com



[+91 94112 29553](https://wa.me/919411229553)



consulting@newsensepvtltd.com

प्रकृति दर्शन

ISSN : 2581-8392

हिन्दी मासिक पत्रिका

संपादक
बालादत्त

उप संपादक
डॉ. कमला शर्मा

सहायक संपादक
सतीश शर्मा

प्रबंध संपादक
संदीप कुमार शर्मा

वरिष्ठ संपादकीय सलाहकार
सुधींद्र मोहन शर्मा, भूजलविद, पर्यावरणविद

संपादकीय सलाहकार टीम
अजय कुमार तोमर, वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक (मानद)
संदीप नानावटी, प्रोफेसर, पशु चि. महाविद्यालय (मानद)
डॉ. ललिता पाण्डेय, शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत (मानद)
विवेकवर्धन श्रीवास्तव, वरिष्ठ पत्रकार, (मानद)
कमलेश पाठक, वरिष्ठ पत्रकार

ग्राफिक डिजाइनर
ऊधम सिंह

विज्ञापन एवं प्रचार प्रसार
न्यू सेंस मार्केटिंग सर्विसेस प्राइवेट लिमिटेड
9411229553
E mail : newsense2020@gmail.com

आवरण फोटोग्राफ
मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की फेसबुक साइट से साभार



प्रकृति दर्शन

प्रकृति संरक्षण, संवर्धन का अंकुरण
करने वाली पत्रिका
© सर्वाधिकार सुरक्षित
editorpd17@gmail.com

Price @ Rs. 100/- 10/-

● वर्ष 6 ● अंक 2 ● अप्रैल 2026
संपादकीय/विज्ञापन/प्रसार-संपर्क

द्वितीय तल, मकान नंबर 07,
सेक्टर 7 बी, आवास विकास,
बुद्धि विहार, फेज-2, निकट सेंट मेरी स्कूल,
दिल्ली रोड, मुरादाबाद,
उत्तर प्रदेश, पिन कोड - 244001

ईमेल

editorpd17@gmail.com

मोबाइल

8191903651 ■ 9411229553

वेबसाइट

www.prakritidarshan.com

- न्यू सेंस मार्केटिंग सर्विसेस प्राइवेट लिमिटेड द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित। किसी भी रूप में सामग्री की नकल प्रतिबंधित।
- प्रकृति दर्शन बिना आमंत्रित प्रकाशन सामग्री को लौटाने के लिए बाध्य नहीं है।
- सभी विवादों का निपटारा मुरादाबाद की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों और फोरमों में ही किया जायेगा।
- स्वामी एवं मुद्रक न्यू सेंस मार्केटिंग सर्विसेस प्राइवेट लिमिटेड द्वारा 07/7बी आवास विकास बुद्धि विहार, मुरादाबाद उत्तर प्रदेश से प्रकाशित एवं मुद्रित। प्रकाशक एवं संपादक : बालादत्त।

NEW SENSE MARKETING SERVICES
PRIVATE LIMITED
PRAKRITI DARSHAN
RNI- UPHIN/2018/76392
ISSN : 2581-8392



विवरण

1. सफल सिंगापुर-जापान...	-	06
2. प्रकृति के प्रति उत्तरदायित्व...	डॉ. दीपक कोहली	11
3. पृथ्वी का सरोकार और...	डॉ.स्वप्निल व्यास	14
4. पृथ्वी को बचाने में...	सतीश उपाध्याय	16
5. शब्दों में मां, व्यवहार ...	समीप जैन	19
6. टूट गई प्रेम और...	सविता व्यास	22
7. पृथ्वी की सीमाएं और...	उमा व्यास	25
8. पेंगुइन-दुर्लभ सुंदरता...	गरिमा संजय	27
9. पेंगुइन की अस्तित्व...	डॉ. सुनीता फड़नीस	29
10. सफेद चश्में वाली...	डॉ. पूनम जैन	31
11. सोलह छतों की साधना...	महेश बंसल	37
12. जलीय जीवों का महत्व...	सीमा शर्मा	40
13. दर्शन मेनारिया को...	-	42
14. परिंडे लगाकर बचाएं...	-	43
15. केंद्र सरकार की महत्वपूर्ण...	-	44
16. अबकी गर्मी आईये नैनीताल...	-	45
17. गर्मियों में लीजिए साहस...	नलिन खोईवाल	46
18. हम अपनी धरती को....	ज्योति जैन	48
19. ब्लू इकोनॉमी-समुद्र से...	विभा कनन	49
20. प्रदूषण बढ़ा, लेकिन बजट...	विजय गर्ग	53
21. अंतिम दृश्य....	मनोज शाह	54



वरना जीवन की धुरी ही बिगड़ जाएगी

सोचिए कि यह जो धरा है, पृथ्वी है क्या इसे हमने वाकई रहने के लिए लायक छोड़ा है, क्या हमें हमारे पूर्वजों ने इसे इसी अवस्था में हमें दिया था, क्या ये इतनी ही मुश्किलों में घिरी हुई थी ? सोचिएगा तो पाएंगे कि बीते कुछ वर्षों में पृथ्वी को हमने धीरे-धीरे कचरा घर, जहरीले पदार्थों का ठिकाना और न जाने क्या क्या बना दिया है, कुल मिलाकर कहें तो पृथ्वी पर जीवन हमने कठिन बना लिया है।

कभी हम ऐसे भी सोचते हैं कि ये पृथ्वी पर कितने असंख्य जीवों का घर है और हमारी महत्वकांक्षाओं ने कितनों का जीवन संकट में डाला है लेकिन हकीकत तो यह है कि जागरुकता और मुश्किलों का यदि तुलनात्मक अध्ययन किया जाएगा तो पाएंगे कि मुश्किलों का अंबार है क्योंकि हम इसके संरक्षण के लिए पूरे मनायोग से न तो जागरुक हो रहे हैं और न ही सचेत। सचेत होना होगा वरना जीवन की धुरी इस पृथ्वी की धुरी से अलग हो जाएगी। हम अपना नहीं तो कम से कम उन असंख्य जीवों के बारे में ही सोच लें जिनका जन्म प्रकृति में किसी महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपकर किया गया है, लेकिन उनका जीवन ही संकट में आ पहुंचा है। जहरीले और प्रदूषित वातावरण में पृथ्वी पर वाकई एक दिन जीवन अत्यंत कठिन हो जाएगा और इतना कठिन कि हम उसकी कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। हम इसकी शिराओं में जहर घोल रहे हैं, इसके गर्भ से पानी उलीच रहे हैं इससे पैदावार के लिए मनचाहा दुर्व्यवहार कर रहे हैं कैसे बचेगी ये पृथ्वी, कैसे बचेगी ये धरा। जागरुकता के लिए प्रतिवर्ष 22 अप्रैल को अंतर्राष्ट्रीय पृथ्वी दिवस मनाया जाता है, अच्छी पहल है लेकिन केवल एक दिन में सुधार तो नहीं होगा हां सुधार के मनोयोग को एक दिन में

तैयार किया जा सकता है। संकल्प लें और अपनी प्यारी धरा को जीवनदायी रहने दें।

अप्रैल में काफी महत्वपूर्ण दिवस आते हैं, 3 अप्रैल को विश्व जलीय पशु दिवस, 5 अप्रैल को राष्ट्रीय समुद्री दिवस (भारत), 7

अप्रैल को विश्व स्वास्थ्य दिवस तथा अंतर्राष्ट्रीय बीवर दिवस, 22 अप्रैल को अंतर्राष्ट्रीय पृथ्वी दिवस तथा 25 अप्रैल को विश्व पेंगुइन दिवस मनाया जाता है, यह सभी दिन बहुत खास हैं क्योंकि ये चेताते हैं कि हमें इन दिवसों पर कोरा दिखावा नहीं करना है, वास्तविकता जाननी है, समझनी है और उस दिशा में सुधार के प्रयास करने हैं। डिजिटल युग है, सूचना का अभाव नहीं है, सूचना तंत्र अब तक की सदियों में सर्वश्रेष्ठ अवस्था में है उसके बाद भी हम मौन नहीं रह सकते, समझिए, जानिए और सुधार में जुट जाइये क्योंकि बहुत सुधार आवश्यक है वरना आने वाले सालों में एक साथ सबकुछ हमारे हाथों से छिटक जाएगा।

सावधान हो जाईए...जागरुक बनिए।

Baladatt

बालादत्त, संपादक,
प्रकृति दर्शन, मासिक पत्रिका



बालादत्त

संपादक, प्रकृति दर्शन

संपादकीय





(फोटोग्राफ मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की फेसबुक साइट से साभार)

सफल सिंगापुर - जापान दौरा: हरित ऊर्जा को बढ़े हाथ

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने हाल ही में सिंगापुर और जापान दौरा किया था जो पूरी तरह सफल माना जा रहा है, इस दौर से न केवल निवेश की नई राह खुली हैं, बल्कि तकनीकी क्षेत्र में नए अवसरों के साथ वैश्विक स्तर पर साझेदारी मजबूत होने लिहाज से भी दौरा बेहद उत्साहित कर रहा है, जानकारों का मानना है कि यह मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का यह दौरा नई राह खोलने और विशेषकर पर्यावरण की दृष्टि से भी बेहद महत्वपूर्ण है। बताया जा रहा है कि सिंगापुर-जापान दौरे में 1.5 लाख करोड़ के एमओयू तथा 2.5 लाख करोड़ के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं। इस निश्चित ही विकास को नई गति मिलेगी।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने हाल ही के दिनों में 4 दिवसीय विदेशी दौरा किया था इसे लेकर काफी उत्साहवर्धन माहौल था, उम्मीदें भी बहुत थीं कि इस दौर को निश्चित ही सफलता मिलेगी और जिस विजन के तहत मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ कार्य कर रहे हैं उस लिहाज से इस दौरे के बाद परिणाम भी सुखद ही आए हैं, एमओयू के साथ निवेश प्रस्ताव मिलना निश्चित ही खुश करने वाली सूचना है। ऐसा भी माना जा रहा है कि यह दौरा उत्तर प्रदेश

- **उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का यह दौरा नई राह खोलने और विशेषकर पर्यावरण की दृष्टि से भी बेहद महत्वपूर्ण**

को वन ट्रिलियन डॉलर अर्थव्यवस्था बनाने की दिशा में बेहद महत्वपूर्ण साबित होने वाला है।

ग्रीन हाइड्रोजन सेंटर ऑफ एक्सीलेंस स्थापित करने की घोषणा

जापान दौरे में हरित ऊर्जा सहयोग को बढ़ावा देने की भी राह बनी है, पर्यावरण के नजरिए से देखें तो यह दौरा बेहद सफल साबित हुआ है। जैसा कि बताया गया है कियामानाशी हाइड्रोजन कंपनी, यूनिवर्सिटी ऑफ यामानाशी, आईआईटी कानपुर, आईआईटी बीएचयू, हरकोर्ट बटलर टेक्निकल यूनिवर्सिटी, और मदन मोहन मालवीय यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी के सहयोग से ग्रीन हाइड्रोजन सेंटर ऑफ एक्सीलेंस स्थापित करने की घोषणा की गई है। पर्यावरण की दिशा में यह घोषणा बहुत ही उम्मीद जगाने वाली





(फोटोग्राफ मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की फेसबुक साइट से साभार)

है, निश्चित तौर प्रदेश सरकार का यह एक महत्वपूर्ण कदम साबित होगा। इसके लिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा किए गए प्रयास निश्चित ही सराहनीय हैं।

जापान दौरे पर ये भी खासरहा

- जापान दौर में बहुत सी प्रमुख उपलब्धियां भी मिली हैं, हम उन्हें देखें तो जापान में आयोजित निवेश संवाद के दौरान प्रदेश सरकार को हजारों करोड़ रुपये के एमओयू और निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं, ये सकारात्मक और बेहतर भविष्य को लेकर उम्मीद जगाने वाला है।

मिली जानकारी के अनुसार जापान में निवेश संवाद में कुछ प्रमुख कंपनियों के साथ एमओयू हस्ताक्षरित हुए, उनमें कुबोटा कॉर्पोरेशन, स्पार्क मिंडा (सहयोग में टोयो डेन्सो), जापान एविएशन इलेक्ट्रॉनिक्स इंडस्ट्री और नागासे एंड कंपनी लिमिटेड शामिल हैं। यह एमओयू भविष्य की राह खोलने वाले निर्णय साबित होंगे ऐसी उम्मीद की जा रही है।

- इसी बीच यदि हम इस दौरे में देखें तो बी 2 जी बैठक में भी बहुत सा प्रमुख हुआ है। सुजुकी मोटर कॉर्पोरेशन, होंडा कार्स इंडिया लि., कोनोइके ट्रांसपोर्ट कंपनी लि., मित्सुई एंड कंपनी लि., रैपिडस कॉर्पोरेशन, मारुबेनी कॉर्पोरेशन, सुमितोमो रियलिटी एंड डेवलपमेंट कंपनी लि. और एमयूएफजी बैंक जैसी दिग्गज

कंपनियों ने सहभागिता की है। इन कंपनियों के प्रमुख निवेश क्षेत्र कृषि मशीनरी, ऑटो ओईएम व कंपोनेंट्स, ऑटो आरएंडडी, सेमीकंडक्टर, डाटा सेंटर, ग्रीन हाइड्रोजन, पावर-टू-गैस, कंप्रेसड बायो गैस, ईएसडीएम, लॉजिस्टिक्स एवं वेयर हाउसिंग रहे। इसे लेकर काफी उत्साहजनक माहौल है।

जापान सिटी' होगी विकसित

जैसी की जानकारी मिली है कि 500 एकड़ में यमुना एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण (यीडा) क्षेत्र में 'जापान सिटी' विकसित की जाएगी। जहां जापानी कंपनियों के लिए समर्पित औद्योगिक वातावरण तैयार किया जाएगा। यह भी प्लान है कि ओईएम एवं कंपोनेंट निर्माताओं के लिए डेडिकेटेड ऑटो क्लस्टर और आरएंडडी सुविधाएं स्थापित की जाएंगी। यह भी जानकारी मिली है कि इन्वेस्ट यूपी में जापान डेस्क को और सुदृढ़ किया जाएगा जिसकी मॉनिटरिंग सीधे मुख्यमंत्री कार्यालय द्वारा की जाएगी। जापान उत्तर प्रदेश के एमएसएमई क्षेत्र में भी तकनीक हस्तांतरण, कौशल विकास, संयुक्त उपक्रम एवं सप्लाय चेन एकीकरण को बढ़ावा देगा, यह उत्तर प्रदेश के विकास के लिहाज से बेहद सकारात्मक है। इसके अलावा मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने एलजीरो सीरीज मैग्लेव ट्रेन स्टेशन का दौरा भी किया और हाई-स्पीड ट्रेन में यात्रा भी की। यहां श्रेष्ठ परिवहन





तकनीक के क्षेत्र में सहयोग की संभावनाओं पर भी जो संवाद हुआ है ऐसा माना जा रहा है कि वह पूरी तरह से सकारात्मक रहा है।

पर्यटन को भी बढ़ावा

इस महत्वपूर्ण दौर में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी को एक और सफलता मिली है वह यह कि उत्तर प्रदेश और जापान के बीच पर्यटन को नियमित प्रोत्साहन दिए जाने पर भी सहमति है। जैसी की जानकारी मिली है कि राज्य के वैश्विक महत्व के बौद्ध सर्किट और रामायण सर्किट को जोड़ते हुए आध्यात्मिक, सांस्कृतिक एवं विरासत पर्यटन को बढ़ावा दिया जाएगा। ऐसा माना जा रहा है कि इससे दोनों देशों के निवासियों के बीच संबंध सुदृढ़ होंगे, नए क्षेत्र में नए निवेश अवसर भी सृजित होंगे। सिंगापुर में भी मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी का दौरा काफी सफल रहा है। इस दौरान में इन्वेस्टर रोड शो के दौरान टीम यूपी को एमआरओ, कार्गो हब, सेमीकंडक्टर, डेटा सेंटर, लॉजिस्टिक्स, स्किलिंग और फिनटेक जैसे क्षेत्रों में व्यापक सहयोग पर सहमति बनी। मुख्यमंत्री ने सिंगापुर के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, उपप्रधानमंत्री और अन्य मंत्रियों से मुलाकात की, यह मुलाकात उत्साहवर्धक बताई जा रही है, इससे आपसी समन्वय और सहयोग को नया बल मिलेगा।



(फोटोग्राफ मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की फेसबुक साइट से साभार)

औद्योगिक, तकनीकी और अवसंरचनात्मक सहयोग को नई दिशा मिली है। विशेष रूप से जेवर स्थित नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट को एमआरओ और कार्गो हब के रूप में विकसित करने की संभावनाओं पर सकारात्मक चर्चा हुई है।

(पीडी फीचर)



मैगज़ीन डिज़ाइनिंग से लेकर डिजिटल डेवलपमेंट तक—एक ही छत के नीचे!

मैगज़ीन Designing, Proof Reading, Layout, Complete Digital Magazine Development, Bloggers Support एवं अन्य मीडिया सेवाओं के लिए संपर्क करें—



New Sense Marketing Services Pvt. Ltd.



<https://newsensepvtltd.com/>



WhatsApp: 9411229553

आपकी मैगज़ीन, हमारी प्रोफेशनल पहचान।



आपको यह अवगत कराते हुए हर्ष हो रहा है की "निम्नलिखित सूची के अनुसार राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय एवं केंद्रीय मंत्रालयों / विभागों एवं विभिन्न राज्य के विभागों को प्रकृति दर्शन, मासिक पत्रिका विभिन्न माध्यमों से प्रेषित की जा रही है। "

1. International Organizations (for Global Recognition)

- United Nations Environment Programme
- Food and Agriculture Organization
- World Wildlife Fund
- International Union for Conservation of Nature
- United Nations Development Programme

2. National Environmental Agencies / Authorities

- Central Pollution Control Board, Govt of India
- National Biodiversity Authority, Govt of India
- National Green Tribunal, Govt of India
- Wildlife Institute of India, Govt of India
- Forest Survey of India, Govt of India
- Botanical Survey of India, Govt of India
- Zoological Survey of India, Govt of India
- Indian Council of Forestry Research and Education
- National Afforestation and Eco Development Board

3. Central Government Missions & Climate Programs

- National Mission for Clean Ganga
- National Mission on Sustainable Agriculture
- National Water Mission
- National Mission for Green India
- National Mission on Himalayan Studies





आपको यह अवगत कराते हुए हर्ष हो रहा है की "निम्नलिखित सूची के अनुसार राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय एवं केंद्रीय मंत्रालयों / विभागों एवं विभिन्न राज्य के विभागों को प्रकृति दर्शन, मासिक पत्रिका विभिन्न माध्यमों से प्रेषित की जा रही है। "

4. Central Government Ministries (India)

- PMO ,Govt of India
- Ministry of Environment, Forest and Climate Change, Govt of India
- Ministry of Jal Shakti, Govt of India
- Ministry of New and Renewable Energy, Govt of India
- Ministry of Earth Sciences, Govt of India
- Ministry of Agriculture and Farmers Welfare, Govt of India
- Ministry of Rural Development, Govt of India
- Ministry of Housing and Urban Affairs, Govt of India
- Ministry of Science and Technology, Govt of India
- Ministry of Tribal Affairs, Govt of India
- Ministry of Fisheries, Animal Husbandry and Dairying, Govt of India
- Ministry of Tourism, Govt of India
- Ministry of Education, Govt of India
- MSME , Govt of India
- Ministry of Health and FW , Govt of India
- All Mines Department of Govt of India and State Govt.

5. State Government Environment Departments

- All State Environment & Forest Departments, especially:
- Uttar Pradesh ,Uttarakhand ,Bihar & Jharkhand Forest Department
- Delhi ,Haryana & Punjab Pollution Control Committee
- Maharashtra, Madhya Pradesh & Chhattisgarh Environment Department
- Gujarat & West Bengal & North East State Forest Department
- Rajasthan & Jammu & Kashmir Forest Department
- Tamil Nadu ,Andhra ,Karnataka & Telangana Forest Department
- Kerala & All State Forest and Wildlife Department

6. Important PSU / Corporate CSR Departments

- | | |
|---|-----------------------|
| ● NTPC Limited | ● Tata Power |
| ● Indian Oil Corporation Limited | ● Reliance Industries |
| ● Oil and Natural Gas Corporation | ● Adani Green Energy |
| ● Power Grid Corporation of India Limited | ● JSW Energy |
| ● Coal India Limited | ● Vedanta Limited |





फोटोग्राफ अखिल हार्डिया, इंदौर, मप्र

“प्रकृति के प्रति उत्तरदायित्व का वैश्विक संकल्प”

● अंतर्राष्ट्रीय पृथ्वी दिवस (22 अप्रैल) विशेष

पृथ्वी केवल हमारा निवास नहीं, बल्कि जीवन की समृद्धी संभावनाओं का आधार है। किंतु आधुनिक विकास की अंधी दौड़ ने इसी जीवनदायिनी ग्रह के संतुलन को संकट में डाल दिया है। ऐसे समय में 22 अप्रैल का अंतर्राष्ट्रीय पृथ्वी दिवस हमें यह स्मरण कराता है कि प्रकृति के प्रति जिम्मेदारी केवल पर्यावरण का प्रश्न नहीं, बल्कि मानव सभ्यता के भविष्य का प्रश्न है। यह दिवस हमें विकास और प्रकृति के बीच संतुलन स्थापित करने की दिशा में सामूहिक संकल्प लेने की प्रेरणा देता है।

मानव सभ्यता का संपूर्ण अस्तित्व जिस ग्रह पर आधारित है, वह है हमारी पृथ्वी। यही पृथ्वी हमें जीवन के लिए आवश्यक वायु, जल, भोजन, खनिज और जैव विविधता प्रदान करती है। मनुष्य की समस्त सांस्कृतिक, आर्थिक और वैज्ञानिक उपलब्धियाँ भी अंततः इसी ग्रह की उदारता पर टिकी हुई हैं। किंतु विडंबना यह है कि जिस पृथ्वी ने हमें जीवन और विकास के अनगिनत अवसर दिए, उसी के पर्यावरणीय संतुलन को आधुनिक विकास की अंधी

दौड़ ने गंभीर संकट के सामने ला खड़ा किया है। औद्योगिकीकरण, तीव्र शहरीकरण, प्राकृतिक संसाधनों का अनियंत्रित दोहन और उपभोगवादी जीवनशैली ने प्रकृति के साथ मनुष्य के संतुलित संबंध को कमजोर कर दिया है। यही कारण है कि आज पर्यावरण संरक्षण केवल वैज्ञानिकों या नीति-निर्माताओं का विषय नहीं

रहा, बल्कि समूची मानवता के अस्तित्व से जुड़ा प्रश्न बन गया है। इसी वैश्विक चिंता को केंद्र में रखते हुए प्रत्येक वर्ष 22 अप्रैल को अंतर्राष्ट्रीय पृथ्वी दिवस मनाया जाता है। यह दिवस केवल एक प्रतीकात्मक आयोजन नहीं, बल्कि पृथ्वी के संरक्षण के प्रति वैश्विक चेतना, जिम्मेदारी और सामूहिक संकल्प का प्रतीक है। पृथ्वी दिवस की शुरुआत बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में उस समय हुई जब विश्व के अनेक देशों में औद्योगिक विकास के कारण



डॉ. दीपक कोहली
विशेष सचिव
सचिवालय उत्तर प्रदेश





पर्यावरण प्रदूषण तेजी से बढ़ रहा था। नदियाँ और झीलें प्रदूषित हो रही थीं, शहरों की हवा विषाक्त होती जा रही थी और जैव विविधता पर गंभीर खतरे मंडराने लगे थे। इन परिस्थितियों में पर्यावरण के प्रति जनचेतना जगाने की आवश्यकता महसूस की गई। वर्ष 1970 में अमेरिकी सीनेटर और पर्यावरण समर्थक “गेलॉर्ड नेल्सन” के प्रयासों से पहली बार पृथ्वी दिवस का आयोजन किया गया। उस समय लाखों छात्रों, शिक्षकों और आम नागरिकों ने पर्यावरण संरक्षण के समर्थन में रैलियों और अभियानों में भाग लिया। यह आयोजन इतना प्रभावशाली सिद्ध हुआ कि धीरे-धीरे यह एक वैश्विक आंदोलन का रूप लेता गया। बाद में इसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संगठित करना शुरू किया और आज यह दिवस दुनिया के 190 से अधिक देशों में मनाया जाता है।

समय के साथ पृथ्वी दिवस का महत्व और भी अधिक बढ़ गया है, क्योंकि इक्कीसवीं सदी में पर्यावरणीय संकट पहले की अपेक्षा कहीं अधिक गंभीर हो गया है। वैज्ञानिकों के अनुसार पृथ्वी के औसत तापमान में निरंतर वृद्धि हो रही है, जिसे वैश्विक तापवृद्धि या ग्लोबल वार्मिंग कहा जाता है। वातावरण में कार्बन डाइऑक्साइड और अन्य ग्रीनहाउस गैसों की बढ़ती मात्रा के कारण जलवायु परिवर्तन की समस्या उत्पन्न हो रही है। इसके परिणामस्वरूप ग्लेशियर तेजी से पिघल रहे हैं, समुद्र का स्तर बढ़ रहा है, चरम मौसम की घटनाएँ अधिक तीव्र हो रही हैं और अनेक जीव-प्रजातियाँ विलुप्ति के कगार पर पहुँच रही हैं। इन परिवर्तनों का प्रभाव केवल प्राकृतिक पारिस्थितिक तंत्र तक सीमित नहीं है, बल्कि कृषि, जल संसाधनों, मानव स्वास्थ्य और वैश्विक अर्थव्यवस्था पर भी पड़ रहा है।

वर्ष 2026 में अंतराष्ट्रीय पृथ्वी दिवस की वैश्विक थीम “हमारी शक्ति, हमारा ग्रह (Our Power, Our Planet)” निर्धारित की गई है। यह थीम इस विचार को रेखांकित करती है कि पृथ्वी की रक्षा की शक्ति केवल सरकारों या अंतरराष्ट्रीय संगठनों के पास ही नहीं है, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति, समुदाय और समाज के सामूहिक प्रयासों में निहित है। इस विषय के माध्यम से लोगों को यह प्रेरणा दी जा रही है कि वे स्वच्छ ऊर्जा को अपनाने, प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण, जैव विविधता की रक्षा और पर्यावरण-अनुकूल जीवनशैली को प्रोत्साहित करने में सक्रिय भूमिका निभाएँ। इसका मूल संदेश यह है कि जब आम लोग अपनी सामूहिक शक्ति और जिम्मेदारी को पहचानते हैं, तब पर्यावरण संरक्षण का अभियान एक सशक्त जनांदोलन में परिवर्तित हो सकता है।

पृथ्वी दिवस का मूल उद्देश्य मनुष्य को यह स्मरण कराना है कि

प्रकृति केवल संसाधनों का भंडार नहीं, बल्कि जीवन का आधार है। पृथ्वी का पारिस्थितिक तंत्र अत्यंत जटिल और संवेदनशील है, जिसमें वायु, जल, मिट्टी, वनस्पति, जीव-जंतु और सूक्ष्मजीव सभी एक दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं। यदि इस संतुलन में किसी एक घटक को गंभीर क्षति पहुँचती है, तो उसका प्रभाव पूरे तंत्र पर पड़ता है। उदाहरण के लिए, वनों की कटाई केवल पेड़ों के नष्ट होने की समस्या नहीं है, बल्कि इससे वर्षा चक्र प्रभावित होता है, मिट्टी का कटाव बढ़ता है और अनेक जीव-प्रजातियों का आवास समाप्त हो जाता है। इसी प्रकार जल स्रोतों का प्रदूषण न केवल जलीय जीवों के लिए खतरा है, बल्कि मानव स्वास्थ्य के लिए भी गंभीर समस्या बन जाता है।

आज जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता का क्षरण और प्रदूषण जैसी समस्याएँ यह संकेत देती हैं कि पृथ्वी का पर्यावरणीय संतुलन तेजी से बिगड़ रहा है। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि यदि वैश्विक तापमान में वृद्धि को नियंत्रित नहीं किया गया तो इस सदी के अंत तक समुद्र का स्तर कई सेंटीमीटर तक बढ़ सकता है, जिससे तटीय क्षेत्रों में रहने वाली करोड़ों आबादी प्रभावित हो सकती है। इसी प्रकार अनेक प्रजातियाँ विलुप्त हो सकती हैं और पारिस्थितिक तंत्र में स्थायी परिवर्तन आ सकते हैं। इसलिए पर्यावरण संरक्षण केवल नैतिक जिम्मेदारी ही नहीं, बल्कि मानव सभ्यता के भविष्य की अनिवार्य शर्त बन चुका है।

पृथ्वी दिवस के अवसर पर विश्व भर में अनेक प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। विद्यालयों, विश्वविद्यालयों, सामाजिक संस्थाओं और पर्यावरण संगठनों द्वारा वृक्षारोपण, स्वच्छता अभियान, पर्यावरण रैलियाँ, संगोष्ठियाँ और जनजागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। इन गतिविधियों का उद्देश्य लोगों में पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता और जिम्मेदारी की भावना विकसित करना होता है। विशेष रूप से युवाओं की भागीदारी इस आंदोलन को नई ऊर्जा प्रदान करती है, क्योंकि भविष्य की पृथ्वी उन्हीं की पीढ़ी को विरासत में मिलने वाली है।

भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश के लिए पृथ्वी दिवस का महत्व और भी अधिक है। यहाँ की बड़ी जनसंख्या, तीव्र शहरीकरण और विकास की बढ़ती आवश्यकताएँ पर्यावरण पर अतिरिक्त दबाव डालती हैं। वायु प्रदूषण, नदियों का प्रदूषण, प्लास्टिक कचरे की समस्या और वनों की कटाई जैसी चुनौतियाँ हमारे सामने गंभीर रूप में उपस्थित हैं। साथ ही जलवायु परिवर्तन के प्रभाव भी भारत में स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगे हैं—कहीं सूखा बढ़ रहा है तो कहीं असामान्य वर्षा और बाढ़ की घटनाएँ बढ़ रही हैं। इसलिए भारत में पृथ्वी दिवस केवल एक औपचारिक



उत्सव नहीं, बल्कि पर्यावरणीय चेतना को व्यापक जनआंदोलन में बदलने का अवसर है।

इस संदर्भ में सरकारों के साथ-साथ आम नागरिकों की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। पर्यावरण संरक्षण केवल बड़े नीतिगत निर्णयों से ही संभव नहीं है, बल्कि दैनिक जीवन की छोटी-छोटी आदतों से भी इसमें बड़ा योगदान दिया जा सकता है। जल और ऊर्जा की बचत करना, प्लास्टिक का कम उपयोग करना, वृक्षारोपण करना, कचरे का उचित प्रबंधन करना, सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करना और पर्यावरण के अनुकूल जीवनशैली अपनाना—ये सभी कदम पृथ्वी की रक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। यदि प्रत्येक व्यक्ति अपनी जिम्मेदारी को समझते हुए प्रकृति के प्रति संवेदनशील व्यवहार अपनाए, तो पर्यावरणीय संकटों को काफी हद तक कम किया जा सकता है।

आज विज्ञान और प्रौद्योगिकी भी पर्यावरण संरक्षण की दिशा में नई संभावनाएँ प्रस्तुत कर रहे हैं। सौर और पवन ऊर्जा जैसे नवीकरणीय स्रोतों का उपयोग बढ़ रहा है, हरित प्रौद्योगिकी का विकास हो रहा है और सतत विकास की अवधारणा को वैश्विक स्तर पर स्वीकार किया जा रहा है। इन प्रयासों का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि विकास और पर्यावरण के बीच संतुलन

बना रहे।

यह समझना आवश्यक है कि पृथ्वी केवल एक खगोलीय पिंड नहीं, बल्कि जीवन का अद्वितीय आश्रय है। ब्रह्मांड के विशाल विस्तार में अभी तक हमें ऐसा कोई दूसरा ग्रह नहीं मिला जहाँ जीवन इतनी विविधता और समृद्धि के साथ विद्यमान हो। इसलिए पृथ्वी की रक्षा करना वास्तव में मानव सभ्यता के भविष्य की रक्षा करना है। आज जब मानवता अभूतपूर्व वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति के दौर से गुजर रही है, तब यह और भी आवश्यक हो जाता है कि विकास का मार्ग प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करते हुए आगे बढ़े। यदि हम पृथ्वी को सुरक्षित, संतुलित और जीवनोपयोगी बनाए रखना चाहते हैं, तो हमें अपने दृष्टिकोण और जीवनशैली में पर्यावरण के प्रति गहरी जिम्मेदारी का भाव विकसित करना होगा।

इस प्रकार 22 अप्रैल का अंतर्राष्ट्रीय पृथ्वी दिवस हमें यह संदेश देता है कि पृथ्वी की रक्षा केवल एक दिवस का कार्य नहीं, बल्कि निरंतर चलने वाली वैश्विक प्रतिबद्धता है। जब मानव समाज अपनी सामूहिक शक्ति, वैज्ञानिक विवेक और नैतिक चेतना को एक साथ जोड़कर प्रकृति के संरक्षण का संकल्प लेता है, तभी पृथ्वी का भविष्य सुरक्षित और उज्ज्वल बन सकता है।



PROMOTE YOUR STORY WITH GLOBAL IMPACT!

Publish Your:

- ✓ Business Story
- ✓ NGO Impact Story
- ✓ Personal Branding Story
- ✓ PR Story

in **"PRAKRITI DARSHAN"** —
International Magazine
at an **Affordable Price!**

Reach a wider audience

Build credibility & visibility

Showcase your achievements globally

Call / WhatsApp: 9411229553

NEW SENSE MARKETING SERVICES PVT. LTD.

Website: www.newsensepvtltd.com

Email: consulting@newsensepvtltd.com

Turn your story into your strength – Publish Today!

“

धरती हमारी मां है

सोचिएगा कि धरती हमें कितना देती है और हम उसे कितना लौटाते हैं, धरती के बिना हमारे जीवन का कोई अर्थ नहीं है, जीवन को निरर्थक न होने दें।

—प्रकृति दर्शन,
मासिक पत्रिका

”





फोटोग्राफ अखिल हार्डिया, इंदौर, मप्र

पृथ्वी का परोपकार और हमारा प्रायश्चित...

पृथ्वी का स्वभाव परोपकार है। वह बिना किसी अपेक्षा के देती है—जल, अन्न, वन, खनिज, औषधि, वायु और जीवन। मनुष्य सभ्यता की पूरी कहानी पृथ्वी की गोद में लिखी गई है। जन्म से मृत्यु तक हमारी हर सांस, हर कण और हर अस्तित्व उसी पर निर्भर है। परंतु विडंबना यह है कि जिस धरा ने हमें जीवन दिया, उसी के प्रति हमारा व्यवहार उपेक्षा और शोषण से भरा रहा है। पृथ्वी का परोपकार देखिए वह हर वर्ष सूखे पेड़ों को फिर से हरियाली देती है, नदियों को प्रवाह देती है, खेतों को अन्न से भर देती है। वह शिकायत नहीं करती, प्रतिदान नहीं मांगती। जैसे माँ अपने बच्चों की गलतियों को सहन कर लेती है, वैसे ही पृथ्वी भी मनुष्य की भूलों को सहती रही है। किंतु अब प्रकृति की सहनशीलता की

सीमा दिखाई देने लगी है। जलवायु परिवर्तन, सूखती नदियाँ, घटते जंगल, और बढ़ता प्रदूषण हमें संकेत दे रहे हैं कि पृथ्वी का संतुलन बिगड़ रहा है। भारतीय साहित्य और दर्शन में पृथ्वी को हमेशा माता के रूप में देखा गया है। अथर्ववेद का प्रसिद्ध मंत्र कहता है...

“माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः”

(अर्थात् पृथ्वी हमारी माता है और हम उसके पुत्र हैं)



डॉ. स्वप्निल व्यास

पर्यावरणविद एवं
सहायक प्राध्यापक, इंदौर





यदि हम वास्तव में उसके पुत्र हैं, तो क्या हमारा कर्तव्य केवल उसका दोहन करना है? या उसकी रक्षा करना भी है?

आज पृथ्वी दिवस केवल एक उत्सव नहीं, बल्कि आत्ममंथन का दिन है। यह वह अवसर है जब हमें अपने व्यवहार का प्रायश्चित्त करना चाहिए। प्रायश्चित्त का अर्थ केवल पश्चाताप नहीं, बल्कि सुधार का संकल्प है। अगर हमने जंगल काटे हैं तो हमें वृक्ष लगाने होंगे; अगर हमने नदियों को प्रदूषित किया है तो उन्हें स्वच्छ करने का प्रयास करना होगा; अगर हमने मिट्टी को विषाक्त किया है तो उसे फिर से जीवन देना होगा। हमारी जीवनशैली ही पृथ्वी के संकट का मुख्य कारण बन गई है। सुविधा की अंधी दौड़ में हमने प्रकृति को पीछे छोड़ दिया है। प्लास्टिक, रसायन और अत्यधिक उपभोग ने पृथ्वी के धैर्य की परीक्षा ले ली है। लेकिन आशा अभी भी शेष है। जब भी मनुष्य ने प्रकृति के साथ संतुलन बनाया है, तब पृथ्वी ने स्वयं को पुनर्जीवित कर लिया है। प्रायश्चित्त का पहला

कदम है। प्रकृति के साथ अपना रिश्ता फिर से समझना। हमें यह स्वीकार करना होगा कि हम पृथ्वी के स्वामी नहीं, बल्कि उसके संरक्षक हैं। छोटे-छोटे प्रयास भी बड़ा परिवर्तन ला सकते हैं—एक वृक्ष लगाना, जल बचाना, स्थानीय और देशी प्रजातियों को बढ़ावा देना, और प्रकृति के प्रति संवेदनशील जीवन जीना। पृथ्वी का परोपकार अनंत है, लेकिन उसका धैर्य सीमित है। यदि हम आज नहीं जागे तो आने वाली पीढ़ियों के लिए जीवन कठिन हो जाएगा। इसलिए पृथ्वी दिवस केवल एक दिन का कार्यक्रम नहीं होना चाहिए, बल्कि यह जीवन का संकल्प बनना चाहिए। जब मनुष्य अपने स्वार्थ से ऊपर उठकर पृथ्वी के प्रति कृतज्ञता और जिम्मेदारी का भाव विकसित करेगा, तभी यह प्रायश्चित्त सार्थक होगा। तब शायद पृथ्वी भी मुस्कराकर कहेगी—मेरे बच्चों ने आखिर मेरी पीड़ा समझ ली।




Full Page	Half Page	Quarter Page
Size 16cm x 22cm	Size 16cm x 11cm	Size 8cm x 11cm
Rs.20,000/-	Rs.10,000/-	Rs.5,000/-

Email-editorpd17@gmail.com
www.prakritidarshan.com
 WhatsApp- 8191903651, 8191903650





पृथ्वी को बचाने में पेड़ों की बड़ी भूमिका

● अंतरराष्ट्रीय पृथ्वी दिवस (22 अप्रैल) पर विशेष

"कल, हम सब प्रकृति और उसकी हरियाली को नजदीक से देखेंगे और 'पृथ्वी के संरक्षण में पेड़ों की भूमिका' पर भी चर्चा करेंगे, सभी स्टूडेंट, कल सुबह उस बड़े 'सुरभि पार्क' में पहुंचें, और समय का विशेष ध्यान रखेंगे- 'यह कमांड कर रहे थे, वरिष्ठ पर्यावरणविद् जोशी जी। पर्यावरण में विशेष रुचि लेने वाले सारे स्टूडेंट की एक बड़ी टीम, ध्यान से उनके निर्देशों को सुन रही थी। दूसरे दिन सुबह सारे स्टूडेंट समय पर सुरभि पार्क पहुंच चुके थे।

जोशी जी ने कहा-माय डियर स्टूडेंट, यह नेचर विजिट है इस विजिट में हम जहां पेड़, पौधे, नदी तालाब, झरने पक्षियों के कलरव और शीतल हवा का आनंद लेंगे वही पृथ्वी के तापमान एवं उसकी सुरक्षा में पेड़ों की भूमिका पर भी हम चर्चा करेंगे।

जोशी जी ने पूरी टीम को एक बड़े पेड़ के पास ले जाकर कहा - देखो, यह देखने में तो एक पेड़ ही है, पर हमारी पृथ्वी को



सतीश उपाध्याय

मनेन्द्रगढ़, छत्तीसगढ़
पूर्व जिला प्रभारी,
नेशनल ग्रीन कोर



फोटोग्राफ बंशीलाल परमार, सुवासरा, मध्य प्रदेश



बचाने में इसकी बहुत बड़ी और गहरी भूमिका होती है। आप लोगों ने पर्यावरण अध्ययन में जो पढ़ा होगा, उसके आधार पर बताइए।

पेड़ हमारे पृथ्वी को किस प्रकार सपोर्ट करते हैं?

स्टूडेंट की टीम पर्यावरण एवं पृथ्वी के संरक्षण की दिशा में रुचि लेने वाली जानकारी टीम थी।

सारे स्टूडेंट ने एक-एक कर बताना शुरू किया।

सर, सबसे पहले तो मैं यह बताना चाहूंगा कि, हमारी पृथ्वी के तापमान को पेड़ ही संतुलित रखते हैं एवं मिट्टी को बांध कर रखते हैं।

और- जोशी जी बच्चों से पूछ रहे थे।

और ये, जल स्तर को बनाकर रखते हैं।

और- जोशी जी ने पूछा

और सर हमने पढ़ा है, पेड़ ही पृथ्वी के फेफड़े होते हैं।

जोशी जी ने कहा- वेरी गुड, यानी पेड़ हमारी पृथ्वी को स्वस्थ रखते हैं। उन्होंने कहा -आप सभी लोग यह मान लीजिए यदि हमें पृथ्वी को बचाना है तो पेड़ों को बचाना होगा। फिर जोशी जी ने कहा कि, - अब हम आप लोगों को

हम यह जानकारी देंगे कि, वास्तव में हम जो एक जगह स्थिर, खड़े और हरे भरे पेड़ देखते हैं, वे अपने अस्तित्व को बचाने के लिए कितनी मेहनत करते हैं।

संस्कृति बोली- सर, यह एक जगह वर्षों से खड़े पेड़ जहां उगते हैं वहीं बड़े हो जाते हैं और बूढ़े हो जाते हैं, तो यह कैसी मेहनत करते होंगे?

अमित ने कहा- बिल्कुल सर, मुझे भी लगता है कि एक जगह खड़े होकर यह सारे पेड़ धूप सेकते रहते हैं, और धीरे-धीरे बड़े हो जाते हैं इसमें मेहनत कैसी?

जोशी जी बोले - "देखो बच्चों, आपकी बात सही है कि सभी पेड़ एक जगह खड़े रहते हैं और धूप सेकते रहते हैं लेकिन सच्चाई यह है कि सभी पेड़-पौधे दिन और रात बहुत व्यस्त रहते हैं और बहुत मेहनत करते हैं।

काशवी ने पूछा -वह कैसे, सर?

अच्छा है, आपके मन में यह जानने की जिज्ञासा है तो आप लोगों को बताता हूं दरअसल सच्चाई यही है कि, पौधे हर दिन जीवित रहने और अपने भविष्य की तैयारी के लिए बहुत मेहनत करते हैं।

अर्चना ने कहा - वही तो हम जानना चाहते हैं सर

जोशी जी, सारे बच्चों को एक बड़े पेड़ के पास ले गए। देखो जिस प्रकार से मनुष्यों को खाने के लिए भोजन की जरूरत पड़ती है उसी प्रकार पौधों को भी जीवित रहने के लिए भोजन की जरूरत

पड़ती है।

यह जो पेड़ की जड़, मिट्टी के भीतर जाते हुए देख रहे हो, यह बात तो आप लोगों को मालूम ही होगी कि इसकी जड़ जमीन के काफी नीचे तक गई है, फिर उन्होंने छात्र-छात्राओं की टीम की ओर देखते हुए पूछा -कोई बता सकता है की इन जड़ों का क्या काम है?

रेखा बोली- सिंपल बात है सर, इन्हीं जड़ों के माध्यम से ये मिट्टी से यह पानी ग्रहण करते हैं।

वेरी गुड,

जोशी जी ने कहा-आप सभी यह भी जान लीजिए कि ये सारे पेड़ अपने पत्तों के द्वारा ही हवा से -"कार्बन डाइऑक्साइड" लेते हैं फिर सूर्य के प्रकाश से प्राप्त ऊर्जा की सहायता से वे पानी और कार्बन डाइऑक्साइड को मिलाकर जटिल शर्करा के अणु बनाते हैं और ऑक्सीजन छोड़ते हैं।

तुमने प्रकाश संश्लेषण तो पढ़ा होगा, पत्तों की यही क्रिया प्रकाश संश्लेषण कहलाती है-

रंजना के मन में भी एक प्रश्न था, उसने पूछा - सर पौधे इन शर्करा अणुओं को किस प्रकार उपयोग करते हैं?

जोशी जी ने कहा - पौधे अपनी श्वसन क्रिया में इसका प्रयोग करते हैं और इस प्रक्रिया में शर्करा से जो ऊर्जा निकलती है, वे इसे और अधिक जटिल रसायनों में बदलकर उससे नई पत्तियां, तने फूल जैसे अंगों का निर्माण करते हैं।

इसका मतलब सर, पौधे के लिए शर्करा बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं

बिल्कुल सही समझा तुमने।

जोशी जी ने कहा - यह नई पत्तियां, तने, फूल जैसे अंगों का तो निर्माण करते ही हैं परंतु पौधों के अंगों के निर्माण के लिए धूप पानी और कार्बन डाइऑक्साइड ही पर्याप्त नहीं होते।

रवि ने कहा -सारे पेड़ मिट्टी में अपनी जड़ जमाए रहते हैं यह भी उनके लिए बहुत जरूरी है न?

हां, मिट्टी से यह अन्य खनिज पोषक तत्व जैसे नाइट्रेट फास्फेट अवशोषित करते हैं यानी यह भी अपनी आहार को संतुलित करते हैं।

जोशी जी ने कहा - तुम सबको यह जानकर आश्चर्य होगा कि पौधे, दिन भर मिट्टी से आवश्यक खनिजों को अवशोषित करते रहते हैं और विभिन्न भागों में बगैर थके हुए पहुंचाते रहते हैं।

विनय ने पूछा- सर एक बात बताइए कि रोशनी में पौधे बढ़ते हैं यदि इन पौधों को अंधेरे में रख दिया जाए तो क्या होगा?

जोशी जी ने कहा - वेरी गुड, बहुत अच्छा प्रश्न है विनय का।





पौधे यह जानने की कोशिश करते हैं कि दिन का उजाला बढ़ गया है या घट रहा है उससे उनको मौसम का अनुमान लगाने में उनका मदद मिलती है। पौधे समझ जाते हैं कि ऋतु में बदल रही है। बसंत ऋतु आ रही है अब फूल खिलने का समय आ गया तुमने देखा होगा कि बसंत ऋतु में ज्यादा फूल खिलते हैं। वे यह भी जान जाते हैं कि अब सर्दी पास आने वाली है इसलिए वह भोजन को जमा करना शुरू कर देते हैं।

उन्होंने एक पेड़ की गांठ को दिखाते हुए काशवी से पूछा बताओ, काशवी बेटी इस पेड़ की गांठ की, पेड़ के लिए क्या उपयोगिता है ?

काशवी, कुछ बोल नहीं सकी।

फिर उन्होंने कहा कि- आज मैं तुमको बताता हूँ, यदि किसी पेड़ या पौधे कोई गांठ बनाते हैं मतलब उनमें उनका भोजन सुरक्षित रहता है और वे इसी तरीके से अपने भोजन की पूर्ति भी करते हैं। सर्दियों में उन्हें जब पर्याप्त धूप नहीं मिलती तो कुछ पेड़ अपनी पत्तियां गिरा देते हैं, क्योंकि वह उनका उपयोग नहीं कर पाते। बसंत आने पर फिर नई पत्तियां उगती हैं पौधे केवल रोशनी की मात्रा ही नहीं बल्कि उसकी गुणवत्ता पर भी ध्यान देते हैं।

जोशी जी ने मुस्कुराते हुए कहा- यह पेड़ पौधे भी बहुत चालाक होते हैं और बहुत चालाकी से काम करते हैं

काशवी ने उत्सुकता से पूछा -वह कैसे सर ?

जोशी जी ने कहा- पौधे, अपनी सुरक्षा का भरपूर ध्यान रखते हैं यदि कोई कीट -पतंगे उनकी पत्तियों को खाता है तो वह ऐसे

रसायन बनाते हैं जो पत्तियों को कम स्वादिष्ट बना देते हैं ,कुछ पौधे हवा में रसायन छोड़कर अपने आसपास के पौधों को भी खतरों के चेतावनी देते हैं।

जोशी जी ने कहा -और सुनो पेड़ों से संबंधित एक मजेदार बात यदि कोई फफूंद रोग आक्रमण करता है तो पौधे उससे लड़ने के लिए विशेष रसायन बनाते हैं और अपने क्षतिग्रस्त भागों को अलग कर देते हैं।

कल्पना, जो अब तक बहुत ध्यान से जोशी सर की बात सुन रही थी उसने कहा- इसका मतलब यह सर इस प्रकार भले ही पौधे शांत और स्थिर दिखाई देते हैं लेकिन इनका हर दिन अत्यंत व्यस्त और बड़ी गतिविधियों से भरा हुआ होता है।

बिल्कुल सही समझा है तुमने-जोशी जी ने मुस्कुराते हुए कहा नेचर विजिट करते हुए लंच का समय हो गया था उन्होंने एक बड़े बरगद की छांव के नीचे चादर बिछाई। सभी स्टूडेंट अपना-अपना टिफिन खोलकर और मिल बांटकर लंच करने लगे।

इस नेचर विजिट से सबके चेहरे में प्रसन्नता और खुशी के भाव थे। अंत में स्टूडेंट के कैप्टन एवं क्लास मानीटर हरीश ने जोशी जी के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि -सर आपने आज पृथ्वी और पेड़ के बारे में जो जानकारी उससे कई नई जानकारी हम सबको प्राप्त हुई काशवी ने पेन और डायरी दिखाते हुए कहा- देखिए सर आपने जो बताया था कुछ बातें मैंने लिख लिया है जोशी जी ने कहा- वेरी गुड और सभी स्टूडेंट के मन में पृथ्वी और पेड़ के प्रति एक जिम्मेदारी का भाव उभर चुका था।





**Join our
Membership
Plan**

www.prakritidarshan.com



www.prakritidarshan.com

**Limited
Time
Offer**

**Sponsorship Partner of
Prakriti Darshan
Any Forthcoming issue**

**Sponsorship for Single issue
@Rs.25,000/-**

Sponsorship Plan :

**Total Value Gained: ₹65,000+ GST .
Your Contribution: ₹25,000 only**



Email-editorpd17@gmail.com
www.prakritidarshan.com
WhatsApp- 8191903651, 8191903650

www.prakritidarshan.com





फोटोग्राफ बंशीलाल परमार, सुवासरा, मंदसौर, मप्र

शब्दों में 'माँ', व्यवहार में 'संसाधन' – पृथ्वी के साथ हमारा असली रिश्ता

● तीन देशों के अनुभव और एक दुनिया की सच्चाई के बीच

हम “भारत माता” कहते हैं।

दुनिया “Planet Earth” कहती है।

लेकिन अगर हम एक पल के लिए रुककर ईमानदारी से खुद से पूछें, तो एक सवाल सामने आता है।

क्या हम सच में इस धरती के साथ वैसा ही व्यवहार करते हैं, जैसा एक माँ के साथ किया जाता है?

क्योंकि सच थोड़ा असहज है।

जिस धरती को हम माँ कहते हैं, उसी पर हम सबसे ज्यादा बोझ डालते हैं।

जिसे हम जीवनदायिनी मानते हैं, उसी के संसाधनों का हम बिना सोचे उपयोग करते हैं।

तो क्या “माँ” कहना एक गहरी सच्चाई है,

या सिर्फ एक शब्द, जिसे हमने अपनाया तो है, लेकिन निभाया नहीं?

तीन देशों, भारत, सिंगापुर और अमेरिका में रहते हुए यह सवाल मेरे लिए सिर्फ एक विचार नहीं रहा।

यह धीरे-धीरे एक अनुभव बना और फिर एक आईना, जिसमें मैंने सिर्फ दुनिया को नहीं, बल्कि खुद को भी देखा।

भारत: भावना का रिश्ता, और एक असहज सच

भारत में “पृथ्वी” अपने आप में अधूरी लगती है, जब तक उसके साथ “माता” न जुड़ जाए।

बचपन से ही हम मानते हैं कि यह धरती हमें जन्म देती है, हमारा पालन-पोषण करती है और अंत में हमें अपने भीतर समेट लेती



समीप जैन

खंडवा, मप्र

वर्तमान में न्यू जर्सी, अमेरिका में निवासरता
पेशे से बैंकिंग एक टेक्नालॉजी से जुड़े हैं





है।

यहाँ प्रकृति के साथ रिश्ता आध्यात्मिक और भावनात्मक है। पेड़, नदियाँ और पर्वत केवल तत्व नहीं, बल्कि जीवन और आस्था के प्रतीक हैं।

लेकिन जैसे-जैसे हम बड़े होते हैं, एक सच्चाई सामने आती है।

जिस धरती को हम माँ कहते हैं, उसी पर हम कचरा फैलाते हैं।

जिन नदियों को हम पूजते हैं, उन्हीं में हम प्रदूषण बहाते हैं।

यह विरोधाभास हमें सोचने पर मजबूर करता है।

क्या हमारा रिश्ता सच में इतना गहरा है, या हम केवल शब्दों में ही जुड़े हुए हैं?

सिंगापुर: जहाँ शब्द नहीं, आदतें बोलती हैं

सिंगापुर में “धरती माँ” जैसा भावनात्मक संबोधन शायद कम सुनाई देता है, लेकिन जो दिखता है, वह और भी प्रभावशाली है।

यहाँ साफ-सफाई, व्यवस्था और अनुशासन जीवन का हिस्सा हैं।

कचरा फैलाना गलत ही नहीं, बल्कि दंडनीय है।

हरियाली को सहेजकर रखा जाता है।

पानी और संसाधनों का उपयोग सोच-समझकर किया जाता है।

यह एक अलग तरह का सम्मान है।

यहाँ भावना कम दिखाई देती है, लेकिन जिम्मेदारी साफ दिखती है।

और यही हमें एक महत्वपूर्ण बात सिखाता है।

भावना प्रेरित कर सकती है, लेकिन आदत ही बदलाव लाती है।

अमेरिका: जागरूकता और जीवनशैली का द्वंद्व

अमेरिका में “Mother Earth” एक विचार है।

यहाँ लोग पर्यावरण के बारे में जानते हैं, उस पर चर्चा करते हैं और प्रयास भी करते हैं।

“Earth Day”, “climate change” और “sustainability” जैसे विषय सामान्य बातचीत का हिस्सा हैं।

लेकिन इसके साथ एक दूसरी सच्चाई भी है।

सुविधा यहाँ जीवन का बड़ा हिस्सा है।

ऑनलाइन खरीदारी, अधिक पैकेजिंग और निजी वाहनों पर निर्भरता जीवन को आसान बनाते हैं, लेकिन पर्यावरण पर दबाव भी बढ़ाते हैं।

यहाँ एक स्पष्ट द्वंद्व दिखाई देता है।

हम जानते हैं कि क्या सही है, लेकिन उसे अपनाना हमेशा आसान नहीं होता।

दुनिया की नजर: “माँ” का मतलब हर जगह एक जैसा नहीं

जब हम अपने अनुभवों से आगे बढ़कर दुनिया को देखते हैं, तो एक दिलचस्प सच्चाई सामने आती है।

प्राचीन यूनानी संस्कृति में पृथ्वी को “Gaia” कहा गया, एक देवी जो जीवन की जननी मानी जाती है।

दक्षिण अमेरिका में “Pachamama” का भाव मिलता है, जो संपूर्ण प्रकृति और समय का प्रतीक है।

पूर्वी दर्शन में पृथ्वी को संतुलन देने वाली ऊर्जा माना गया है।

और आधुनिक विज्ञान में, पृथ्वी को एक self-regulating system के रूप में देखा जाता है।

यानी,

दुनिया पृथ्वी को माँ मानती है, लेकिन हर जगह “माँ” का अर्थ अलग है।

एक और सच्चाई: वही पृथ्वी, लेकिन बँटी हुई दुनिया

आज हम उसी धरती पर जी रहे हैं, जिसे हम अपना घर कहते हैं, लेकिन उसी पर सीमाएँ खींचते हैं।

देशों के बीच तनाव और संघर्ष हमें यह याद दिलाते हैं कि हम एक ही पृथ्वी पर रहते हुए भी कितने अलग हैं।

हम कहते हैं “धरती माँ”,

लेकिन उसी धरती को हम बाँट देते हैं।

यह विरोधाभास केवल पर्यावरण का नहीं, बल्कि हमारी सोच का भी है।

पृथ्वी हमें जोड़ती है, लेकिन हम उसे बाँट देते हैं।

तीन देशों का सच: भावना, अनुशासन और जागरूकता

अगर इन अनुभवों को साथ रखें, तो एक स्पष्ट तस्वीर सामने आती है।

● भारत सिखाता है कि प्रकृति से प्रेम कैसे किया जाए।

● सिंगापुर सिखाता है कि प्रकृति की रक्षा कैसे की जाए।

● अमेरिका सिखाता है कि प्रकृति के लिए आवाज़ कैसे उठाई जाए।

तीनों के अपने-अपने मजबूत पहलू हैं, और अपनी-अपनी सीमाएँ भी।

असली चुनौती: शब्दों और कर्मों के बीच की दूरी



आज सबसे बड़ा सवाल यह नहीं है कि हम पृथ्वी को क्या कहते हैं।

सवाल यह है कि हम उसके साथ कैसा व्यवहार करते हैं।

हम “माँ” कहते हैं, लेकिन उस भावना को अपने व्यवहार में नहीं लाते।

हम पर्यावरण की बात करते हैं, लेकिन सुविधा के आगे झुक जाते हैं।

यही दूरी हमारी सबसे बड़ी चुनौती है।

हम क्या कर सकते हैं: छोटे कदम, सच्चा बदलाव

बदलाव बड़े फैसलों से नहीं, छोटे कदमों से आता है।

प्लास्टिक का कम उपयोग, पानी और बिजली की बचत, जरूरत और इच्छा के बीच फर्क समझना, बच्चों को प्रकृति से जोड़ना।

ये साधारण बातें लगती हैं, लेकिन इन्हीं से आदत बनती है।

और आदत ही भविष्य तय करती है।

अंत: एक सवाल, जो आपके साथ रह जाएगा

शायद समस्या यह नहीं है कि दुनिया पृथ्वी को “माँ” नहीं मानती।

समस्या यह है कि जहाँ हम उसे माँ मानते हैं, वहाँ भी हम उस रिश्ते को निभा नहीं पाते।

हमने शब्दों को संभाल लिया है।

लेकिन व्यवहार अभी भी पीछे रह गया है।

और यही इस कहानी की सबसे बड़ी सच्चाई है।

क्योंकि आने वाला समय पृथ्वी से नहीं, हमसे सवाल करेगा।

“जब आपको पता था कि पृथ्वी संकट में है, तब आपने क्या किया?”

उस दिन हमारे पास बड़े शब्द नहीं होंगे।

सिर्फ हमारे छोटे-छोटे फैसले होंगे।

यही “अंतर्राष्ट्रीय पृथ्वी दिवस” का असली संदेश है।

पृथ्वी को “माँ” कहना आसान है।

लेकिन उससे कहीं ज्यादा जरूरी है माँ की तरह उसका ध्यान रखना।

CampustoCorporate Jobs
www.campustocorporate.in

**Find Jobs or Hire Talent for
NGO, CSR & Development Sectors**

Post Jobs
Find Jobs
AI Resume Builder & Free Resume Download

Leverage Fast Job Search Features to Boost Your Career

- Fast Job Search** - Cut through noise with curated and relevant job openings.
- Jobs Across Sectors** - Explore HR, Education, Consulting, NGO and CSR opportunities.
- Jobs Near Me** - Access verified listings for quick, local career opportunities.
- Career Growth** - Find social impact jobs, niche roles, and professional careers.
- ATS-Optimized Resumes** - Create AI-powered resumes or download free ATS-friendly templates.

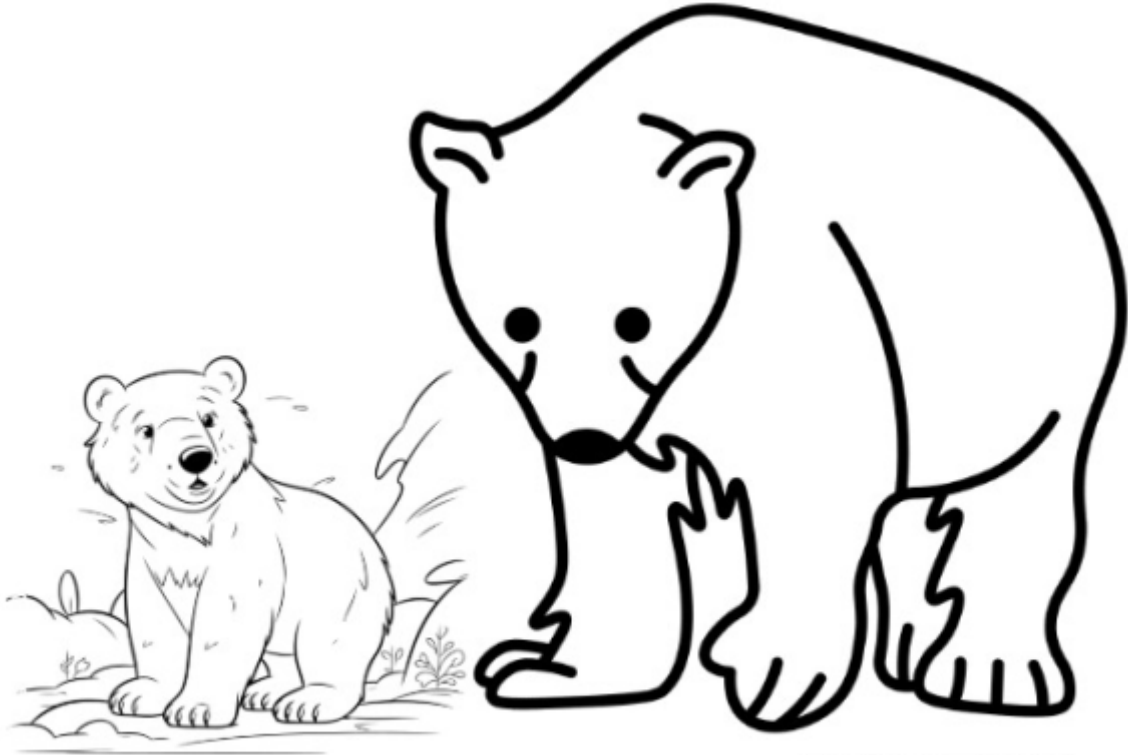


Image Credit to canva.com

टूट गई प्रेम और विश्वास की डोर

ये तब की बात है जब छत्तीसगढ़ पर वनों का राज्य था। वहां की भूमि सागौन, तेंदू, आम, नीम, इमली आदि वृक्षों से आच्छादित थी। इसी छत्तीसगढ़ के बस्तर जिले के एक कस्बे में अरुण पांडे अपनी पत्नी और पांच वर्ष के बेटे के साथ रहा करते थे। अरुण पांडे वहां के डाकखाने में पोस्टमास्टर थे। जिंदगी आराम और आनंद से बीत रही थी। गौतम अपनी माता-पिता के आँगन में किलकारी लिया करता था, दोनों ही अपनी ममता से उसे निहाल किए हुए थे। दुःख क्या होता है उस मासूम को कहां पता था! पर कहते हैं न हम कहां इतने सक्षम हैं कि भविष्य के प्रारब्ध को जान सकें, होनी को दरवाजे के बाहर ही रोक दें। अरुण की पत्नी श्यामा को जो कि बहुत सरल थीं और पूरे गांव की चहेती थीं मलेरिया ने जकड़ लिया और ऐसा जकड़ा कि न डॉक्टर न वैद्य उन्हें उसकी जकड़ से छुड़ा सके। 25, वर्ष की अल्पायु में ही उनका निधन हो गया।

बस यहीं से गौतम का सुख से हाथ छूट गया। वह जिंदगी के ताल में

कहानी

डूबने-उतरने लगा। पिता तो यह सोचकर कि गौतम को मां मिल जायेगी और मुझे मेरे अकेलेपन का सहारा मिल जायेगा, उन्होंने दूसरा ब्याह कर लिया और गौतम की जिम्मेदारी अपनी दूसरी पत्नी सीमा पर डाल मुक्त हो गए। सीमा शुरुआती दौर में तो ठीक रही पर धीरे-धीरे उसके व्यवहार में परिवर्तन आने लगा। मां बनने के बाद तो गौतम उसे बोझ लगने लगा। वह गौतम से खराब व्यवहार करने लगी। दूध भरा कटोरा जो उसकी मां उसे चांद की लोरी सुनाते हुए पिला देती थीं वह अब उसके पहुंच से दूर हो गया था। माथे पर जो प्यार का स्पर्श मिला करता था अब उससे कान खींचे जाते थे। जो सिर पर हाथ फेरा



सविता व्यास
इंदौर मध्यप्रदेश





करते थे अब उसके गालों पर थप्पड़ के निशान दिया करते थे एक हाथों के बदल जाने से कितना परिवर्तन आ गया था जीवन में! घर के कामों की जिम्मेदारी भी उसके नन्हें कंधों पर डाल दी गई थी। अरुण भी नए आए शिशु पर ही स्नेह जताया करते थे। जिसे अपने घर वाले ही प्रताड़ित करें, उसकी उपेक्षा करें तो बाहर वाले स्वतः ही उसका लाभ लेने लगते हैं। विद्यालय के शिक्षक भी उसकी पढ़ाई पर ध्यान देने की जगह घर का काम करवाने लगे थे। जिसने सुख और नेह का स्वाद, रस से लिया हो उसके लिये यह अप्रत्याशित दुःख का स्वाद हलाहल की तरह होता है। यही गौतम के साथ हुआ, वह मुरझाने लगा। इससे व्यथित हो वह अक्सर मंदिर के परिसर में आकर बैठ जाता था और मौन रुदन करता था। मंदिर के पुजारी बाबा उसे कुछ फल खाने को दे देते थे और धार्मिक कथाएं सुनाया करते थे। एक दिन उन्होंने ध्रुव की कहानी सुनाई कि किस तरह विमाता, पिता और सौतेले भाई से उसे उपेक्षा मिला करती थी तब मां सुमति ने उसे भगवान की गोद प्राप्ति के लिए बताया था। भगवान की गोद सबसे बड़ी गोद है उसमें बैठने के योग्य बनना चाहिए। पुजारी जी से ध्रुव की कथा सुन गौतम जो अब बारह वर्ष का हो चुका था एक रात चुपचाप जंगल की ओर निकल गया। वह आगे बढ़ता जा रहा था कि रात हो गई, घना अंधेरा हो गया। वह थोड़ा भयभीत हुआ और पेड़ पर चढ़ कर बैठ गया। सोचा कि उसने तो खतरनाक और क्रूर इंसानों की प्रताड़ना सही है तो जानवर से भयभीत क्या होना! पेड़ पर चढ़ने के बाद उसने देखा थोड़ी ही दूर पर आग की रोशनी है। उसने सोचा चल कर देखा जाए कौन हैं वहां? क्या पता कोई गुरुजी ही मिल जाएं इस घने जंगल में! जब वह समीप पहुंचा तो देखा कुछ साधुओं की टोली है जो चारों ओर आग जला कर बैठी हुई है और भोजन बना रही है। वह उनके समीप गया। एक साधु ने नर्म शब्दों में पूछा "बच्चा तुम कौन हो? यहां अकेले क्या कर रहे हो? क्या घर से भाग आए हो?"

गौतम ने कहा "जी बाबा। मुझे तप करना है, भगवान की गोद में बैठना है। उनका नेह प्राप्त करना है। आप बता सकते हैं मुझे भगवान कैसे मिलेंगे?"

साधु बोले "बच्चा, हम तो छोटे-मोटे तपस्वी हैं। हम स्वयं ही उन्हें प्राप्त करने के लिए भटक रहे हैं। भगवान प्राप्ति का मार्ग गुरु ही बता सकते हैं। गुरु प्राप्ति के लिए हम सब हिमालय की ओर जा रहे हैं। तुम्हें साथ चलना है तो चलो, पर विचार कर लो अच्छे से। बहुत कठिन राह है भगवान की प्राप्ति की।"

गौतम बोला "अब पीछे नहीं हटूंगा। मैंने तो संघर्ष में ही बचपन गुजारा है, तकलीफों का आदी हो गया हूं। मैं आपका भोजन बना

दिया करूंगा, बर्तन साफ़ कर दिया करूंगा पर आप मुझे अपने साथ ले चलिए।"

गौतम उनके साथ चल पड़ा। हिमालय तक पहुंचते- पहुंचते वह बहुत से साधु-संतों के संपर्क में आया। उसने यही पाया कि ये कृत्रिम तरीके से ध्यान की अवस्था में आते हैं। ध्यान लगाने के लिए गांजे, चरस आदि का सहारा लेते हैं। वह निराश हो रहा था, उम्मीद टूट रही थी। एक दिन एक बाबा ने उसे बताया कि बहुत ऊंचाई पर करीब तीन हजार- पांच हजार मीटर से ऊपर तुम्हें एक बाबा मिलेंगे, वे बहुत सिद्ध हैं, पर वे किसी को भी अपना शिष्य नहीं बनाते हैं, एकांतवासी हैं। वहां पहुंचना कठिन भी है। पर कुछ ग्रामवासी वहां तक जाते हैं तुम उनके साथ चले जाना। कोशिश कर लो, तुम्हारे भाग्य से वे तुम्हें मिल जाएं और शायद तुम्हें अपना शिष्य बना लें।

गौतम ने कहा जी बाबा। आपके आशीर्वाद से मुझे अवश्य सफलता मिलेगी।

ऐसा कह कर वह ऊपर की ओर बढ़ गया। साधुओं ने उसे गर्म कंबल और कुछ खाने को दिया। तीन दिन की यात्रा के पश्चात वह एक नदी के पास पहुंचा। उसने देखा एक कृशकाय व्यक्ति नदी के किनारे एक चट्टान पर बैठा है। वह उनके नज़दीक गया, चरण-स्पर्श किया और कहा- कृपया मुझे आप अपना शिष्य बना लीजिए। प्रभु-प्राप्ति के लिए मार्गदर्शन कीजिए- गुरुदेव ने उससे पूछा - तुम कौन हो लल्ला? इतनी अल्प वय में वैराग्य की चाह क्यों?

केवल सिद्धि की प्राप्ति के लिए मैं किसी को शिष्यता नहीं देता हूं, अगर सच में भगवद प्राप्ति चाहिए तो मेरे प्रश्न के उत्तर देने होंगे। गौतम के उत्तरों से संतुष्ट हो उन्होंने कहा लल्ला तुम्हारे चेहरे का तेज और तुम्हारी लगनशीलता, तुम्हारी लक्ष्य पाने की विकलता मुझे विवश कर रही है तुम्हें शिष्य बनाने को। आज से ही तुम्हारी शिक्षा आरंभ होती है।

परमानंदजी ने उसे ध्यानवस्था सिखानी आरंभ कर दी। उसका प्रकृति से प्रेम और अन्य जीवों के प्रति प्रेम देखकर उसे प्रेमानंद नाम दिया।

एक दिन गौतम ध्यानावस्था में था तो उसे तेज सांसों की अनुभूति हुई। उसे महसूस हुआ कोई उसे सूंघ रहा है। उसने आँखें खोली तो उसके सामने विशालकाय भूरा भालू खड़ा था। वह घबराया नहीं बस उसे उत्पुंकता से ताकता रहा। कुछ ही क्षणों में ही वह भालू जंगल में गायब हो गया। गौतम ने परमानंद जी से कहा गुरुदेव, आज मैंने विशालकाय भालू को देखा। क्या वह यति था? गुरुदेव ने कहा- नहीं, वह हिमालयन भालू है। यहां थोड़ी और





ऊंचाई पर पाए जाते हैं। यहां की जलवायु इनके अनुकूल है। इनका आहार चींटियां, दीमक, कीड़े और शहद है। ये छोटे पशु - पक्षियों को भी खा लेते हैं। घास, जड़ें भी प्रेम से खाते हैं। ये खूंखार होते हैं पर इन्हें छेड़ा न जाए, नुकसान न पहुंचाया जाए तो ये हमें नुकसान नहीं पहुंचाते हैं। फिर भी हमें सतर्क रहना चाहिए। कुछ इंसानों के कारण इनमें शत्रुभाव आ गया है। आज उनकी जनसंख्या में कमी आने का सबसे बड़ा कारण इंसान ही है। हमारे अतिक्रमण से, वनों की कटाई से, कृषिभूमि के विस्तार से और अन्य विकास कार्यों से भालूओं का प्राकृतिक आवास सिकुड़ रहा है। इनका अवैध शिकार किया जाता है। भालू के पित्ताशय, खाल और पंजों के व्यावसायिक मूल्यों के कारण इनका शिकार किया जा रहा है। फलदार वृक्षों की कमी से कारण ये मानव बस्तियों के पास जाने लगे हैं, बकरियों आदि को खाने लगे हैं जिस कारण इन दोनों के बीच शत्रुता और बढ़ गई है। जलवायु परिवर्तन जिसके हम ही कारण हैं इनकी शीतनिद्रा चक्र को बाधित कर दिया है। अचानक बाढ़, बर्फबारी में बदलाव, सूखे की घटनाओं ने इनकी जनसंख्या को प्रभावित किया है।

ये जो तुमने भालू देखा है न ये गर्भवती मादा है। अब शीतनिद्रा का समय आ रहा है तो ये सुरक्षित स्थान देख रही है। ये स्थान मिट्टी की गुफा, चट्टानों के बीच की दरार या घने जंगल होते हैं। ये पहली बर्फ गिरते ही विशेष तैयारी करने लगते हैं। अपने भोजन की व्यवस्था करते हैं ये गर्मियों में और शरद ऋतु में अपने शरीर पर भरपूर चर्बी जमा कर लेते हैं जो शीतनिद्रा के समय इनके अस्तित्व को बचाए रखती है। शीत ऋतु के बाद जब हम वापिस आएंगे तब हम इस मादा के साथ दो या तीन शावक पाएंगे। ये गर्भ धारण अक्टूबर -नवंबर में करती है और जनवरी -मार्च तक शिशु को जन्म देती हैं। हम भी कल ही नीचे चले जाएंगे। मार्च -अप्रैल तक वापिस आ जाएंगे।

अप्रैल के पहले सप्ताह में ये दोनों ऊपर आए। बर्फ पिघल रही थी। उन्होंने देखा भूरी (मादा भालू का नाम) अपने दोनों शावकों के

साथ खेल रही थी। नर भालू दूर बैठा देख रहा था। गौतम पास जाने लगा तो गुरुदेव ने रोक दिया नहीं... पास मत जाओ। बच्चों के लिए मां बहुत सतर्क होती है। वह हिंसक हो उठती है। गौतम दूर से ही देख कर प्रसन्न हो रहा था। उसे अपना बचपन याद आ रहा था। सोच रहा था मां बनकर मादा कितनी सुंदर हो जाती है! आंखों में ममता ही ममता छलकती है। पर विमाता बनकर ऐसा क्यों नहीं होता है? क्या आर्थिक विपन्नता उसे ऐसा बना देती है! न.. ऐसा होता तो संपन्न घरानों में षड़यंत्र नहीं रचे जाते। कैकेई राम को वनवास नहीं देती। ये पुत्र मोह ही है जो स्त्री को संकीर्ण बना देता है। प्रभु इन दोनों शावकों पर मां का साया बने रहने दें। सोचते हुए वह गुरुदेव के साथ गुफा के अंदर चला गया। सुबह जब दोनों बाहर आए तो उन्होंने बर्फ पर खून बिखरा देखा और घसीटे जाने के निशान देखे। अवैध शिकारियों ने आकर उन मासूमों की जान ले ली थी। वे सन्न रह गए। गौतम दहल उठा, उसके भीतर गुबार सा उठा और सोचा ओह! मानव कितना गिरा हुआ है। थोड़े से लाभ के लिए वह किसी का भी परिवार उजाड़ देता है।

उसने गुरुदेव से कहा गुरुदेव मैं अब नीचे जाऊंगा। कर्तव्य पथ पर। सब गांव वालों को जागरूक करूंगा। अपनी सिद्धियों का उपयोग कर उनमें चेतना विकसित करूंगा। जीव -जंतु के प्रति प्रेमभावना लाने की कोशिश करूंगा।

गौतम कह ही रहा था कि उन्हें गुराँने की आवाज आई वे संभलते तब तक तो नर भालू ने उन पर आक्रमण कर दिया। उनकी क्षत विक्षत देह बता रही थी कि किस तरह मानव के लोभ ने प्रेम और विश्वास की डोर को तोड़ कर हिंसा बो दी थी। दूसरे दिन जब कुछ ग्रामीण गुरुदेव के दर्शन करने आए तो दोनों के शव देखकर गांव में बात फैला दी कि भालू खूंखार और हिंसक हो गया है। कल आकर वो हमें भी नुकसान पहुंचा सकता है। नागरिकों के आग्रह पर प्रशासन ने उसे देखते ही गोली मारने का आदेश दे दिया। इधर मानव का स्वार्थ अहम के नशे में कहकहे लगा रहा था।



जलीय जीव का रक्षक कौन

प्रकृति ने इस दुनिया में हर जीव को रचा है, जल में रहने वाले जीवों का जीवन भी अनमोल है लेकिन उनका जीवन संकट की जद में आ चुका है, उन्हें सुरक्षित रखने के लिए हमें उनके बारे में जानना और समझना आरंभ करना होगा।

-प्रकृति दर्शन, मासिक पत्रिका





फोटोग्राफ अखिल हार्डिया, इंदौर, मप्र

पृथ्वी की सीमाएँ और मानव की सामूहिक जिम्मेदारी

● अर्थ डे, अर्थ ओवरशूट डे और कम्युनिटी की भूमिका

पृथ्वी केवल एक ग्रह नहीं, बल्कि जीवन की वह साझा धरोहर है जिस पर मानव सभ्यता का समूचा अस्तित्व टिका हुआ है। किंतु आधुनिक विकास की दौड़ में मनुष्य ने प्रकृति की सीमाओं को लगातार लांघा है। आज आवश्यकता इस बात की है कि मानव समाज अपने विकास और प्रकृति के संतुलन के बीच एक नया संवाद स्थापित करे, क्योंकि पृथ्वी की सुरक्षा ही भविष्य की सुरक्षा है।

हर वर्ष 22 अप्रैल को पूरी दुनिया में 'अर्थ डे' मनाया जाता है। यह दिन केवल एक प्रतीकात्मक उत्सव नहीं बल्कि पृथ्वी और प्रकृति के प्रति मानव की जिम्मेदारी का स्मरण है। वर्ष 2026 के पृथ्वी दिवस की आधिकारिक थीम "हमारी शक्ति, हमारा ग्रह" (Our Power, Our Planet) निर्धारित की गई है। यह थीम पर्यावरण संरक्षण के लिए व्यक्तिगत और सामूहिक कार्रवाई की तात्कालिकता पर जोर देती है तथा लोगों को एक स्वच्छ और हरित भविष्य के लिए जन-आंदोलन के रूप में जुड़ने के लिए प्रेरित

करती है। इसका मूल उद्देश्य यह रेखांकित करना है कि पृथ्वी की रक्षा केवल नीतियों या संस्थाओं से नहीं बल्कि समाज, समुदायों और प्रत्येक नागरिक की सक्रिय भागीदारी से संभव है।

पिछले एक शताब्दी में औद्योगिक विकास और उपभोक्तावादी जीवन-शैली ने मानव सभ्यता को अभूतपूर्व आर्थिक प्रगति

प्रदान की है। किंतु इस विकास की एक बड़ी पर्यावरणीय कीमत भी चुकानी पड़ी है। बढ़ती ऊर्जा खपत, वनों की कटाई, प्रदूषण तथा भूमि और जल संसाधनों के अत्यधिक उपयोग ने पृथ्वी के पारिस्थितिक संतुलन को गंभीर रूप से प्रभावित किया है। आज जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता का क्षय और जल संकट जैसी समस्याएँ केवल वैज्ञानिक विमर्श का विषय नहीं रहीं, बल्कि मानव अस्तित्व से जुड़ी वैश्विक चुनौतियाँ बन चुकी हैं।



उमा व्यास (आरएएस)

लेखिका विभिन्न समसामयिक

मुद्दों की जानकार एवं श्री कल्पतरु

संस्थान की सक्रिय कार्यकर्ता हैं।





पृथ्वी दिवस की शुरुआत वर्ष 1970 में एक बड़े पर्यावरणीय आंदोलन के रूप में हुई थी। उस समय औद्योगिक प्रदूषण, तेल रिसाव और विषैले अपशिष्ट से उत्पन्न संकटों ने समाज को पर्यावरण संरक्षण के लिए संगठित किया। धीरे-धीरे यह पहल एक वैश्विक अभियान में परिवर्तित हो गई और आज यह 190 से अधिक देशों में मनाई जाती है। इस अवसर पर वृक्षारोपण, प्लास्टिक प्रदूषण के विरुद्ध अभियान, जल संरक्षण कार्यक्रम और जैव विविधता संरक्षण जैसी अनेक गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं, जो प्रकृति के प्रति जिम्मेदारी की भावना को मजबूत करती हैं।

पृथ्वी दिवस के साथ एक अत्यंत महत्वपूर्ण अवधारणा जुड़ी है 'अर्थ ओवर शूट डे'। यह वह तिथि होती है जब मानवता पूरे वर्ष के लिए पृथ्वी द्वारा पुनः उत्पन्न किए जा सकने वाले प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग पहले ही समाप्त कर देती है। इस तिथि की गणना अंतरराष्ट्रीय शोध संस्था 'ग्लोबल फुटप्रिंट नेटवर्क संस्था' द्वारा की जाती है।

हाल के आँकड़े इस संकट की गंभीरता को स्पष्ट करते हैं। वर्ष 2025 में वैश्विक अर्थ ओवरशूट डे 24 जुलाई को आया। इसका अर्थ है कि वर्ष के केवल सात महीनों में ही मानव समाज ने पृथ्वी के पूरे वर्ष के संसाधनों का उपयोग कर लिया। वैज्ञानिक आकलनों के अनुसार वर्तमान समय में मानवता पृथ्वी की पारिस्थितिक क्षमता से लगभग 1.8 गुना अधिक संसाधनों का उपभोग कर रही है।

वर्ष 2026 के लिए वैश्विक अर्थ ओवरशूट डे की आधिकारिक तिथि अभी घोषित नहीं हुई है, किंतु पिछले वर्षों के रुझान यह संकेत देते हैं कि यदि वर्तमान उपभोग पैटर्न में परिवर्तन नहीं हुआ तो यह तिथि और पहले आ सकती है। यह स्थिति इस तथ्य को दर्शाती है कि हम पृथ्वी की प्राकृतिक सीमाओं के भीतर नहीं बल्कि एक प्रकार के पारिस्थितिक ऋण में जीवन जी रहे हैं।

इस समस्या को समझने के लिए पारिस्थितिकी में 'इकोलॉजिकल फुटप्रिंट' की अवधारणा अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह मापता है कि मानव समाज अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पृथ्वी

के कितने जैविक संसाधनों का उपयोग कर रहा है। जब यह उपयोग पृथ्वी की पुनर्जीवन क्षमता से अधिक हो जाता है, तब पर्यावरणीय असंतुलन उत्पन्न होता है। जलवायु परिवर्तन, मरुस्थलीकरण, जैव विविधता का क्षय और जल संकट इसी असंतुलन के प्रत्यक्ष परिणाम हैं।

इन चुनौतियों के समाधान में समुदायों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। पर्यावरण संरक्षण केवल नीतियों या सरकारी कार्यक्रमों से संभव नहीं होता। इसके लिए जमीनी स्तर पर सामाजिक सहभागिता आवश्यक होती है। जब स्थानीय समुदाय प्रकृति संरक्षण की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से शामिल होते हैं, तब परिणाम अधिक प्रभावी और दीर्घकालिक होते हैं।

समुदाय स्थानीय संसाधनों के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। जल स्रोतों का संरक्षण, सामुदायिक वनों का प्रबंधन, वृक्षारोपण तथा पारंपरिक जल संरचनाओं जैसे तालाब, बावड़ी और जोहड़ का पुनर्जीवन ऐसे प्रयास हैं जो स्थानीय स्तर पर पारिस्थितिक संतुलन को मजबूत करते हैं। भारत के कई क्षेत्रों में सामुदायिक भागीदारी से जल और वन संरक्षण के सफल उदाहरण सामने आए हैं।

इसके अतिरिक्त सतत जीवनशैली को अपनाने में भी समुदायों का योगदान महत्वपूर्ण है। ऊर्जा की बचत, सार्वजनिक परिवहन का उपयोग, स्थानीय और मौसमी उत्पादों को प्राथमिकता देना तथा प्लास्टिक के उपयोग को कम करना ऐसे छोटे कदम हैं जो सामूहिक रूप से पृथ्वी पर पड़ने वाले पारिस्थितिक दबाव को कम कर सकते हैं।

अंततः प्रश्न केवल पर्यावरण संरक्षण का नहीं, बल्कि मानव सभ्यता के भविष्य का है। यदि हम पृथ्वी की प्राकृतिक सीमाओं को समझते हुए अपने विकास की दिशा को संतुलित करें, तो एक ऐसा भविष्य संभव है जहाँ प्रगति और प्रकृति साथ-साथ चल सकें। पृथ्वी हमारी संपत्ति नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के प्रति हमारी जिम्मेदारी है, और यही संदेश पृथ्वी दिवस हमें हर वर्ष याद दिलाता है।



सोचिएगा हर दिन खूबसूरती से भरा हुआ है

यह प्रकृति इतनी सुंदर है कि उसे देखने में असंख्य वर्ष भी कम ही रहेंगे, सोचिएगा जब हम इसे अपने सुंदर विचारों के साथ देखते हैं तो महसूस होता है कि हर दिन खूबसूरत है और वाकई हम पूरी उम्र में इस प्रकृति की संपूर्ण सुंदरता देख नहीं सकते, बेहतर है समय मिले तो उसमें खो जाएं।

-प्रकृति दर्शन, मासिक पत्रिका





फोटोग्राफ अखिल हार्डिया, इंदौर, मप्र

पेंगुइन – दुर्लभ सुंदरता कहीं दुर्लभ न हो जाए

इंसानों की तरह दो पाँव से चलते और मछलियों की तरह पानी में तैरते पक्षी भी होते हैं? हाँ होते हैं, और बहुत ही प्यारे भी होते हैं। इनकी प्रजाति कहती है कि ये पक्षी हैं, किंतु उड़ते नहीं हैं। धरती पर चलते हैं, वह भी इंसानों की तरह, और पानी में तैरते हैं, मछलियों की तरह। भले ही ये पक्षी हैं, किंतु इनके पास पंख नहीं, बल्कि फ़िलपर होते हैं। ये फ़िलपर यानी पंख जैसे दिखने वाले हाथ इन्हें अनोखा, अद्वितीय रूप देते हैं।

ये पेंगुइन हैं। सफ़ेद पेट और शेष शरीर काला – श्वेत-श्याम के सर्वाधिक सुंदर प्राकृतिक दृष्टांतों में से एक! दमकती श्वेत कांति पर चारों ओर से गहरे काले रंग का चमकता कोट सा पहने ये पेंगुइन, अपने फ़िलपर अथवा पंख फैलाए जब समूह में चलते हैं तो इनकी सुंदरता देखते ही बनती है। चाल में बच्चों जैसी मासूमियत और शरीर का रंग जैसे काला-सफ़ेद सूट पहने व्यवसायी – एक अलग तरह का समायोजन, एक अलग ही आकर्षण बनाते हैं। मानो टक्सेडो सूट पहनकर किसी कॉर्पोरेट मीटिंग के लिए निकले हों।

वैसे वास्तव में प्रकृति ने इन्हें यह श्वेत-श्याम वर्ण इनकी विशेष सहायता के लिए दिया है। सफ़ेद पेट और ऊपर से काले शरीर के साथ जब ये पानी के अंदर मछलियों का शिकार करने निकलती हैं तो

उनके शरीर का ये रंग उन्हें मछलियों से छुपने में सहायता करता है। जब ये पेंगुइन पानी में तैरते हैं तो पीठ का काला रंग महासागर के अँधेरे में घुल-मिल जाने के कारण इन्हें ऊपर से शिकारियों के हमले से बचाता है। वहीं दूसरी ओर, उनके पेट का रंग सफ़ेद होने के कारण समुद्र की चमकीली सतह में उन्हें छुपा लेता है और नीचे से देखने पर वे अपने शिकार से छुप भी पाते हैं और नीचे स्थित शिकारियों से भी बच पाते हैं।

ये विशेष पक्षी हालाँकि अन्य पक्षियों की तरह आकाश में नहीं उड़ सकते, लेकिन पानी के भीतर ये किसी भी मछली की तरह तैरते हुए उड़ सकते हैं। इनके पास आम पक्षियों की तरह पंख नहीं होते, बल्कि फ़िलपर्स होते हैं, जो नाव चलाने में उपयोग किए जाने वाले चप्पुओं की तरह होते हैं। इन फ़िलपर की सहायता से ये भोजन की तलाश में समुद्र के भीतर लगभग 15 मील प्रति घंटे की रफ़्तार से तैर सकते हैं।



गरिमा संजय

ब्लॉगर, लेखिका, प्रकृति
संरक्षण विषयों पर सतत लेखना





पेंगुइन अधिकतर धरती के दक्षिणी गोलार्द्ध के समुद्री क्षेत्रों में मिलते हैं। अंटार्कटिका ध्रुवीय क्षेत्र के बर्फीले समुद्री पानी में तैरते और इनके तटों पर घूमते अपने जीवन बिताते पेंगुइन मैजेस्टिक एम्परर (भव्य सम्राट पेंगुइन) नाम से प्रसिद्ध हैं। इनके अतिरिक्त, इनकी कुछ किस्में ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड में मिलती हैं, जिन्हें छोटे नीले पेंगुइन कहते हैं और अप-अंटार्कटिक द्वीपों में किंग पेंगुइन पाये जाते हैं। उत्तरी गोलार्द्ध में पेंगुइन की केवल एक प्रजाति पाई जाती है – गैलापागोस पेंगुइन। इनके अतिरिक्त पेंगुइन की सभी प्रजातियाँ भूमध्य रेखा के दक्षिणी भाग में ही पाई जाती हैं।

पेंगुइन का रूप, व्यक्तित्व जितना अनोखा होता है, उनसे जुड़ी कुछ और बातें भी उन्हें विशिष्ट बनाती हैं। जैसे, ये तो हम जानते हैं कि ये धरती पर भी चलती हैं और पानी में तैरती भी हैं। लेकिन ये बात बहुत कम लोग जानते होंगे कि दोनों स्तरों पर इनके समूहों के नाम भी बदल जाते हैं। जहाँ पानी में पेंगुइन के समूहों को राफ्ट कहते हैं, वहीं धरती पर उनका समूह वॉडल कहलाता है।

पेंगुइन न केवल समूह में रहते हैं, बल्कि एक-दूसरे से बहुत अधिक चिपके हुए चलते हैं। उनके इस स्वभाव के पीछे भी एक विशेष कारण है। इनका मूल आवास अत्यधिक ठंडा होता है। समूह बनाकर एक-दूसरे के साथ सटकर रहने से ये अपने शरीर की गर्मी बनाए रखते हैं। उनका यह व्यवहार उन्हें शिकारियों से रक्षा करने में भी सहायता करता है।

पेंगुइन के शरीर में एक और विशेषता ध्यान आकर्षित करती है। हालाँकि ये भी पक्षियों की प्रजाति में आते हैं, लेकिन अधिकांश पक्षियों से ये अनेक मामलों में अलग होते हैं। अधिकांश पक्षियों की हड्डियाँ खोखली होती हैं जिनमें हवा भरी होने के कारण उड़ान भरने के लिए वे हल्के बने रहते हैं। इनके विपरीत, पेंगुइन की हड्डियाँ ठोस होती हैं, और इन ठोस हड्डियों के साथ ही उन्होंने स्वयं को अनुकूलित करके तैयार किया है। इस तरह का अनुकूलन कर लेने के कारण उन्हें तैरने में सहायता मिलती है, क्योंकि ठोस हड्डियाँ पानी में तैरने की प्रवृत्ति को कम कर देती हैं। इस विशेषता के कारण ये पानी के ऊपर नहीं तैरते बल्कि आसानी से नीचे की ओर जा सकते हैं। और, यही विशेषता उन्हें कुशल गोताखोर बनाती है, जिससे वे पानी के अंदर कुशलता से गोताखोरी कर पाते हैं और तेजी से तैर पाते हैं।

अत्यधिक सर्द स्थान में जीने के लिए प्राणियों को अपने शरीर में गर्माहट बनाए रखना अत्यधिक आवश्यक होता है। इसके लिए भी प्रकृति ने पेंगुइन को विशेष सुविधाएँ दी हैं। यों तो उनके घने पंख बहुत सीमा तक उनके शरीर को गर्म रखते हैं, लेकिन अपने शरीर में गर्माहट बनाए रखने के लिए उनके पास यही एकमात्र तरीका नहीं है।

इनकी पूँछ के पास एक ग्रंथि होती है जो एक विशेष प्रकार का तेल बनाती रहती है। यह तेल पानी को उनके शरीर में प्रवेश करने से रोकता है।

पेंगुइन प्रतिदिन अपने पंखों पर इस तेल को फैलाने में कई घंटे व्यतीत करते हैं। पानी में गोताखोरी करने से पहले वे इस काम को और भी अधिक सजगता से करते हैं। पंख को पूरी तरह से तेल से ढँक लेने से उनके पंख पूरी तरह से जल-रोधक बन जाते हैं। इससे वे आसानी से ठंडे पानी के अंदर तैरते हैं, और उन्हें ठंड भी नहीं लगती। स्पष्ट है कि यह प्राकृतिक तकनीक उन्हें बर्फीले पानी में भी सूखा और गर्म रखती है।

अब बात करते हैं, पेंगुइन के पैरों की, जिनकी बनावट के कारण हमें उनकी सुंदर, मनमोहक चाल देखने को मिलती है। इनके पैर छोटे लेकिन शक्तिशाली होते हैं जो उनके शरीर के पीछे की ओर स्थित होते हैं। इस तरह के पैर होने के कारण वे सीधा खड़े रहकर अपना संतुलन बनाए रख पाते हैं। जहाँ सख्त और सशक्त पैर उन्हें बर्फ और धरती पर लंबी दूरी तक चलने में सहायता करते हैं, वहीं इनकी उँगलियों के बीच झिल्ली होती है, जो उन्हें तैरने में सहायता करती है। पानी में तैरते समय इनके पैर पतवार की तरह काम करते हैं, जिससे वे न केवल पानी में तैर पाते हैं, बल्कि पानी के अंदर दिशा भी बदल पाते हैं।

यही नहीं, इनके पैरों में रक्त संचरण की भी विशेष व्यवस्था होती है, जिससे वे अत्यधिक ठंड के मौसम में भी अपने पूरे शरीर में गर्माहट बनाए रख पाते हैं और बर्फीली ठंड से भी सुरक्षित बने रह पाते हैं।

पेंगुइन को कभी बर्फ पर तो कभी धरती पर अक्सर चलकर लंबी दूरी तय करनी पड़ती है। ऐसी स्थिति के लिए प्रकृति ने उन्हें उनके पैरों को कुछ इस तरह का बनाया है जो उन्हें लंबी दूरी तक चलने में भी सक्षम बनाते हैं। इनकी कुछ प्रजातियाँ समुद्री बर्फ पर लगभग 60 मिल तक चलकर अपने प्रजनन स्थान तक पहुँचती हैं। ऐसे में इनके पैरों की बनावट उनकी सहायता करते हैं और उन्हें थकने नहीं देते।

पेंगुइन हमारी प्रकृति की सबसे सुंदर देन में से एक है, सामान्यतः उनके चलने का ढंग सबसे पहले आकर्षित करता है। किंतु हम इनके विषय में जितना अधिक जानने का प्रयास करते हैं, शोध करते हैं, इनकी विशेषताएँ और भी अधिक हैरान करती हैं, और प्रकृति की रचनात्मकता के समक्ष मानव-मन नतमस्तक हुए नहीं रह पाता।

Ref:

1

<https://www.worldwildlife.org/species/penguin/>

2

<https://www.cabq.gov/artsculture/biopark/news/10-cool-facts-about->





फोटोग्राफ अखिल हार्डिया, इंदौर, मप्र

पेंगुइन का अस्तित्व संकट में

● विश्व पेंगुइन दिवस पर स्वास

समूह या झुंड में दिखने वाला एक आकर्षक खूबसूरत सा पक्षी, जो है तो पक्षी मगर फुर्ती, संतुलन और सरपट गति से समुद्र में तैरता है। यह मानव की तरह दो पैरों से चलता है लेकिन उड़ने में असमर्थ है और अपना आधा जीवन धरती पर और आधा महासागरों में बिताते हैं। पेंगुइन अपनी सीधी और अजीब सी चाल, सुंदर काली सफेद त्वचा के मेल के कारण विश्व में सबसे लोकप्रिय जीवों में से एक है। चिड़ियाघरों में भी पेंगुइन को देखना एक खूबसूरत सा अनुभव होता है। जहां उन्हें उनके अनुकूल वातावरण देने की कोशिश की जाती है।

पेंगुइन अधिकतर कॉलोनी में रहते हैं जिनके कारण इनमें उच्च स्तर का सामाजिक बंधन होता है। ये एक साथ एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते हैं और बहुत शोर मचाते हैं। पृथ्वी का दक्षिणी हिस्सा जो बर्फ से आच्छादित होता है, में बहुत कम प्राणी जीवित रह पाते हैं, पर पेंगुइन के लिए यह स्वर्ग है।

पेंगुइन धरती के उन अद्भुत जीवों में शामिल है जो प्रकृति की

रचनात्मकता, बुद्धिमत्ता और संतुलन का जीवंत प्रमाण है। इन सभी खूबियों के कारण ये पक्षी जगत में विशिष्ट माने जाते हैं।

पेंगुइन को आमतौर पर मनुष्यों से विशेष डर नहीं लगता। इसका

एक खूबसूरत सा उदाहरण अभी-अभी किसी चैनल पर प्रदर्शित माय पेंगुइन फ्रेंड नामक एक सच्ची घटना पर आधारित चित्रपट में देखा। तेल रिसाव के कारण एक छोटा सा पेंगुइन फंसकर तैरने और चलने में असहाय हो जाता है। एक सहृदय नाविक उसे बचा कर, उसकी सफाई करके, मछली खिलाकर उसकी जान बचाता है। दोनों की दोस्ती मित्रता का एक अनुपम उदाहरण दिखाया गया है। पेंगुइन की भावनाओं को इंसान जैसा दिखाया गया है। स्वयं को बचाने वाले इंसान से वह कितना प्रेम रखता है और उसे समुद्र में छोड़ देने के बावजूद लौट लौट कर उसके घर आने लगता है।

लेकिन अब इन अनोखे पक्षियों को अपने अस्तित्व पर बड़े संकट का सामना करना पड़ रहा है। वैश्विक तापमान में वृद्धि समुद्री बर्फ



डॉ सुनीता फड़नीस
इंदौर, मप्र सेवानिवृत्त व्याख्याता





को तेजी से पिघला रही है जिससे पेंगुइन के प्रजनन स्थल अस्थिर हो रहे हैं। उनकी कई प्रजातियां बर्फ पर अंडे देती हैं और बच्चों का पालनपोषण करती है। तापमान बढ़ने से जब बर्फ टूट जाती है या पिघल जाती है, तब अंडे और चूजे समुद्र में डूब जाते हैं या टूट जाते हैं।

अंटार्कटिका दुनिया के उन हिस्सों में से है, जो सबसे ज्यादा गर्म हो रहे हैं। जिस कारण पेंगुइन के प्रजनन के समय में आश्चर्यजनक असामान्यता आ गई है।

पेंगुइन को जलवायु परिवर्तन का सूचक माना जाता है अगर उनके जीवनचक्र में बड़े परिवर्तन आ रहे हैं तो इसका असर विश्व की अन्य प्रजातियों पर भी पड़ेगा।

प्रदूषण के कारण पेंगुइन की कई प्रजातियां विलुप्ति की कगार पर है। प्लास्टिक प्रदूषण, प्रकाश प्रदूषण, पारा प्रदूषण, डीजल और तेल के रिसाव से प्रदूषण। तेल रिसाव से उनके पंखों की जलरोधकता (वाटर प्रूफिंग) खत्म हो जाती है। प्लास्टिक निगलने के कारण आंतों में रुकावट और भारी धातु जैसे पारा के संचय से उनकी प्रजनन क्षमता में कमी हो जाती है।

1. तेल रिसाव-

अक्सर तेल लाने ले जाने वाले जहाजों द्वारा रिसाव समुद्र सतह में फैलने लगता है। जल पक्षी पेंगुइन के पंख इस तेल से चिपक जाते हैं और उनके पंखों की जलोपकता नष्ट हो जाती है, जिससे उन्हें हाइपोथर्मिया या अत्यधिक ठंड लगने लगती है। तेल के कारण पंख भारी भी हो जाते हैं। और डूबने लगते हैं। तेल मुंह के अंदर जाने से आंतरिक अंग भी प्रभावित हो जाते हैं।

2. विभिन्न रसायन और भारी धातुएं-

पारा और कैडमियम जैसी भारी धातुएं जो समुद्री खाद्य श्रृंखला में उपस्थित रहती है, पेंगुइन के शरीर में जमा होकर यकृत, गुर्दे, केंद्रीय तंत्रिका तंत्र को गंभीर हानि पहुंचा देती है और प्रजनन क्षमता को भी हानि पहुंचाती है।

3. पेंगुइन के आवासों का विनाश-

प्रदूषण के अलावा गुआनो (पेंगुइन का मल) की कटाई भी उनके

घोसलों के स्थान को नष्ट कर देती है जिससे उनकी आबादी कम होने लगती है।

4. समुद्र का तापमान-

समुद्र का तापमान बढ़ने से मछलियों की संख्या कम होती जा रही है जिससे पेंगुइन के भोजन में कमी आने लगती है। एल नीनो तूफान के कारण पेंग्विन का भोजन जैसे मछलियां और अन्य प्राणी उनकी कालोनी से दूर दक्षिण की ओर चले जाते हैं। आसानी से मिलने वाला भोजन एलनीनो प्रभाव के कारण उन्हें दुर्लभ हो जाता है।

5. मछली पकड़ने की गतिविधियां

व्यावसायिक मछली पकड़ने की गतिविधियां भी उनके भोजन को प्रभावित करती है। पेंगुइन का भोजन खत्म करने में मत्स्य पालन और पर्यटन का बहुत बड़ा हाथ है जिससे पेंगुइन माता-पिता को बच्चों के लिए भोजन लाने हेतु दूरस्थ स्थानों पर जाना पड़ जाता है। बच्चे असुरक्षित और परित्यक्त रह जाते हैं और उनकी मृत्यु दर बढ़ जाती है।

6. बर्ड फ्लू-

बर्ड फ्लू तथा अन्य कई रोगों का भी इन पर खतरा बढ़ता जा रहा है। H5N1 वायरस का आगमन अत्यधिक रोगजनक होकर पेंगुइन की बड़े पैमाने पर मौतें हो रही है। पेंगुइन को जलवायु परिवर्तन के लिए संकेतक प्रजाति माना जाता है क्योंकि पेंगुइन के व्यवहार में देखे जाने वाले परिवर्तन अंटार्कटिका के संपूर्ण स्थिति की तंत्र में हो रहे परिवर्तन को बताने में वैज्ञानिकों की मदद कर रहे हैं। ये अप्रत्यक्ष रूप से धरती के लिए महत्वपूर्ण उपयोगी होते हैं। वे समुद्र से काफी पोषक तत्व जैसे नाइट्रोजन, फास्फोरस लाकर तटों को उपजाऊ बनाते हैं, साथ ही कई मछलियों को भोजन के रूप में ग्रहण कर उनकी आबादी को संतुलित करते हैं। पेंगुइन समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र का महत्वपूर्ण भाग है इनका संरक्षण करना इन्हें बचाना प्रकृति और भविष्य का संरक्षण करना है।



प्रकृति के संसाधन

प्रकृति में व्याप्त संसाधनों पर सभी का बराबर अधिकार है, लेकिन मानव यह भूल गया है वह सभी संसाधनों का उपयोग केवल अपने ही लिए करना चाहता है।

-प्रकृति दर्शन, मासिक पत्रिका





फोटोग्राफ डॉ. पूनम जैन

सफ़ेद चश्मे वाली नन्हीं अतिथि

20 जनवरी 2026 की वह दोपहर मेरे लिए एक शांत उद्घाटन जैसी थी। मोहाली की लंबी सर्दी के बाद उस दिन पहली बार धूप खुलकर निकली थी। कई दिनों से आकाश धुँध और बादलों से ढका था। उस सुबह जब सूर्य दिखाई दिया, तो उसकी गरमाहट में एक आश्वासन था — ऋतु अब बदलने वाली है।

मैं अपने बगीचे के कोने में ऊन की बुनाई लेकर बैठी थी। सर्दियों में मैं मिट्टी को कम छेड़ती हूँ। पौधों को भी विश्राम चाहिए। गेंदा पूरे बगीचे में खिला था — पीले और केसरिया रंग से भरा हुआ। वर्षा ऋतु में मंदिर के बाहर से लाई छोटी कलमों ने अब अपना संसार

रच लिया था। गेंदा मेरा प्रिय है; उसे तोड़ने से पहले भी मैं एक क्षण रुक जाती हूँ। जो अपनी जड़ों से जुड़ा है, उसे खिला रहने देना ही बेहतर लगता है।

तभी तालाब के पास एक हलचल

दिखी। मुझे लगा पेड़ से पीले पत्ते गिर रहे हैं। हवा अधिक नहीं थी, फिर भी एक क्रम में वे नीचे उतर रहे थे। ध्यान से देखा तो समझ आया — वे पत्ते नहीं, नन्ही पीली चिड़ियाँ थीं।



डॉ. पूनम जैन
नाइपर, पंजाब





इतनी छोटी कि गौरैया और बुलबुल भी उनके सामने बड़ी प्रतीत हों। एक-एक कर वे ऊपर वाले पेड़ से उतरकर सफ़ेद मोगरे की झाड़ी में छिप गईं। झाड़ी स्थिर थी, पर भीतर जीवन हिलोरे ले रहा था।

कुछ क्षण बाद वे बाहर आईं और तालाब के किनारे फुदकने लगीं। तभी उनकी पहचान स्पष्ट हुई — आँखों के चारों ओर सफ़ेद घेरा, जैसे किसी ने बारीक चश्मा पहना दिया हो।

जानकारी लेने पर पता चला कि यह हैं Indian White-eye, जिन्हें सामान्यतः “सफ़ेद चश्मे वाली चिड़िया” कहा जाता है।

इनका आकार लगभग 8–9 सेंटीमीटर होता है। रंग हल्का पीला-हरा, स्वभाव अत्यंत चंचल परंतु आश्चर्यजनक रूप से शांत।

ये प्रायः छोटे झुंडों में रहती हैं और कीट-पतंगों के साथ-साथ फूलों के रस पर निर्भर करती हैं। परागण में इनकी सूक्ष्म भूमिका होती है — जब ये एक फूल से दूसरे फूल तक जाती हैं, तो अनजाने में जीवन का आदान-प्रदान करती चलती हैं।

मुझे लगा, शायद मेरे बगीचे का जलस्रोत और देशी पौधे इनके लिए आकर्षण बने हों। शहरी विस्तार के बीच यदि कहीं छोटी झाड़ियाँ, जल और रसायन-मुक्त वातावरण मिल जाए, तो ऐसे पक्षी वहाँ ठहरना पसंद करते हैं।

अगले दिन वर्षा हुई। 22 जनवरी को वे फिर आईं। वही क्रम — समूह में आना, कुछ देर

जल के पास खेलना, फिर एक साथ उड़ जाना। मानो किसी अदृश्य अनुशासन से बँधी हों।

तीन-चार दिनों तक उनका आगमन होता रहा। फिर वे नहीं दिखीं। पढ़ने पर ज्ञात हुआ कि ये पक्षी स्थायी निवासी भी हो सकते हैं, परंतु भोजन और मौसम के अनुसार छोटी-छोटी दूरियाँ तय करते रहते हैं। घनी झाड़ियों में घोंसला बनाते हैं और अत्यंत सूक्ष्म ध्वनियों में संवाद करते हैं।

उनकी यह मौन उपस्थिति मुझे यह स्मरण दे गई कि प्रकृति को शोर की आवश्यकता नहीं होती। सूक्ष्म जीवन भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना दृश्य और विशाल। यदि हम अपने घर के कोने में थोड़ी-

सी जगह, थोड़ा-सा जल और कुछ देशी पौधे बचाए रखें, तो प्रकृति स्वयं आकर बस सकती है।

शहरों में रासायनिक छिड़काव, कंक्रीट का विस्तार और झाड़ियों का अभाव ऐसे नन्हे पक्षियों के लिए चुनौती बन रहे हैं। यदि हम बालकनी में भी जल का छोटा पात्र रख दें, या मोगरा, कनेर, तुलसी जैसे पौधे लगा दें, तो यह केवल सजावट नहीं, बल्कि



फोटोग्राफ डॉ. पूनम जैन

जीवन का निमंत्रण होगा।

आज जब मैं उसी स्थान पर बैठती हूँ, तो अनायास दृष्टि मोगरे की झाड़ी की ओर चली जाती है। सर्दी ढल रही है। तालाब में कमल खिला है।

और मन प्रतीक्षा में है —

कब फिर से वे नन्ही सफ़ेद चश्मे वाली अतिथि

पीले पत्तों-सी उतरेंगी

और मेरे छोटे से बगीचे को

क्षण भर के लिए ही सही,

एक जीवंत वन बना जाएँगी।





NEWSENSE

MARKETING SERVICES PVT. LTD.

Consulting. Media. Education. Growth.

From Registration to Digital Success – We've Got You Covered

Trusted & Chosen by India's Leading Publishers, Institutions & NGOs

We specialize in RNI-approved **Newspaper & Magazine Registration**, Publishing, and Digital Growth Solutions. Our membership-based consulting model makes compliance simple, affordable, and stress-free for publishers, NGOs, institutions, and

Best Part? ★ Our Registration Consultancy is Absolutely FREE

Our Core Services



RNI Registration Consulting

End-to-end support for Newspaper & Magazine Registration, RNI, ISSN, Title Verification, Compliance & Documentation



Academic & Research Publishing

Publish academic & research articles through Prakriti Darshan Journal (ISSN & RNI Recognised)



360° Digital Solutions

Website Development • Branding • Digital Marketing



E-Book & Magazine Sales Platform

Sell Books, E-Books & Magazines directly through our seamless online marketplace



Publishing Solutions

Newspaper & Magazine Publishing (Print & Digital), Article, Journal & Research Publishing, E-Book & Book Publishing



NGO Consultancy & Compliance

Complete support for Trust / Society Registration, 12A, 80G, FCRA, CSR-1 Compliance



360° Digital Solutions

Website Development • Branding • Digital Marketing



consulting@newsensepvtltd.com



+91 94112 29553 | WhatsApp:

**Celebrate the Power of Publishing:
Your Gateway to Success & Recognition**



Book a FREE Consultation with Our Expert



RNI-Approved Publishing Expertise



Free Registration Consulting



Trusted by Publishers, Institution



Simplified Compliance through



One Partner for Publishing +
Digital Growth



www.newsensepvtltd.com



+91 94112 29553



consulting@newsensepvtltd.com



मुरादाबाद मंडल कमिश्नर को भेंट की प्रकृति दर्शन पत्रिका



बीते दिनों एक सुखद अवसर आया जब मुरादाबाद उत्तर प्रदेश के मंडल कमिश्नर श्री आन्जनेय कुमार सिंह जी से उन्हीं के कार्यालय में भेंट हुई। इस दौरान पर्यावरण संरक्षण पर कार्य कर रही मासिक पत्रिका 'प्रकृति दर्शन' के प्रमुख अंक मंडल कमिश्नर महोदय को भेंट किए गए। इस दौरान पत्रिका के संपादक बालादत्त शर्मा, प्रबंध संपादक संदीप कुमार शर्मा तथा शिक्षा मंत्रालय में पूर्व सदस्य मजाहिर खान उपस्थित थे।



गोट विलक



स्कार्लेट आइबिस की खूबसूरती

देखिए इस प्रकृति में कितने अनूठे और अदभुत दृश्य देखने को मिलते हैं, स्कार्लेट आइबिस पक्षी है यह और इसका रंग कितना आकर्षक है। यह दक्षिण अमेरिका और कैरिबियन क्षेत्र में मैंग्रोव, तटीय दलदल और आद्रभूमि में अक्सर निवास करना पसंद करते हैं। यह समूहों में रहना पसंद करते हैं इन्हें घोंसला बनाना पसंद है।



अखिल हार्डिया, इंदौर, मप्र
वरिष्ठ वाइल्ड लाइफ फोटोग्राफर





PEOPLE FOR ANIMALS—BUDAUN

Compassion for Those Who Cannot Speak 🌿

THEY FEEL PAIN.
THEY FEEL FEAR.
THEY NEED YOU.

Every day on the streets and shelters of **Budaun**, innocent animals—injured cows, disabled dogs, hurt monkeys, and abandoned voiceless beings—struggle to survive.

Some are hit by vehicles.

Some are brutally beaten,

Some are left to die in silence.

But they are not alone anymore.



OUR MISSION



People for Animals - Budaun is dedicated to:

- Treating injured & disabled cows
- Rescuing abandoned and accident-hit dogs
- Providing care to injured monkeys
- Emergency medical treatment & shelter
- Daily feeding of helpless animals
- Medicines, bandages & post-surgery care



VIKENDRA SHARMA

Founder & On-Ground
Caretaker

"Until one has loved an animal, a part of one's soul remains unawakened."



HOW YOU CAN HELP



IN-KIND SUPPORT

- Animal food (fodder, grains, dog food)
- Medicines & first-aid supplies
- Blankets, mats, ropes
- Medical equipment & supplements.



FINANCIAL SUPPORT

- Your small-contribution can:
- Save a life
- Heal deep wounds:
- Provide food for days.
- Fund emergency surgeries

PEOPLE FOR ANIMALS BUDAUN

SCAN & PAY



SCAN & DONATE NOW

UPI ID:

peopleforanimalsbudaun3156@sbi

BHIM **G Pay** **PhonePe** **any**

YONO SBI **WhatsApp Pay**

+91 9756041113

YOUR KINDNESS CAN SAVE A LIFE TODAY

If you cannot donate money, share this appeal.

If you cannot rescue animals, support those who do.

People for Animals
Budaun

Serving the voiceless with compassion



सोलह छतों की साधना

(कलेक्टर से सिंधिया तक - डॉ. गरिमा वैश्य की हरित तपस्या की जीवंत गाथा)

ग्वालियर की सांस्कृतिक विरासत से आलोकित धरती पर स्थित एक पुरानी हवेली की छतों पर आज सोलह टेरेस गार्डन प्रकृति के सजीव मंदिर की भाँति स्पंदित हैं, और इन स्पंदनों के केंद्र में हैं डॉ. गरिमा वैश्य, जिनके लिए बागवानी केवल शौक या सजावट नहीं, बल्कि जीवन की तपस्या, स्मृतियों की साधना और आत्मा का विस्तार है।

लगभग चालीस वर्ष पूर्व इसी हवेली में उनके माता-पिता ने दो टेरेस गार्डन बनाए थे, जो उस समय केवल हरियाली का एक प्रयास भर थे, किंतु समय के साथ वे स्मृतियों के बीज बन गए। 4 नवंबर 2008 को पिता स्वर्गीय श्री राम कृष्ण वैश्य के देहावसान और 15 अगस्त 2010 को माँ स्वर्गीय श्रीमती आशु रानी वैश्य के असामयिक चले जाने के बाद जब जीवन में एक गहरा रिक्त स्थान उपस्थित हुआ, तब उसी रिक्तता को भरने के लिए पौधों ने उनके जीवन में प्रवेश नहीं किया, बल्कि वे पहले से उपस्थित होकर उनके मन की मिट्टी में जड़ें जमा चुके थे। एकांत के उन दिनों में पौधे उनके मौन, संवेदनशील और अडिग सहचर बने, और तभी उनके भीतर यह विश्वास अंकुरित हुआ कि “पौधे मेरे सबसे अच्छे दोस्त हैं, धरती फूलों में हँसती है।”

डॉ. गरिमा कहती है - "वर्ष 2010 में जब माता-पिता के देहावसान के बाद मैं पूर्णतः अकेली रह गई थी और जीवन एक कठिन मोड़ पर खड़ा था, तब मेरे आध्यात्मिक गुरु संत कृपाल

सिंह जी मेरे लिए केवल मार्गदर्शक ही नहीं, बल्कि ईश्वर प्रदत्त 'गॉड फादर' के रूप में साथ खड़े रहे। प्रत्येक विषम परिस्थिति में उन्होंने मुझे मानसिक, आध्यात्मिक और नैतिक संबल प्रदान किया तथा दूर-दूर से दुर्लभ पौधे मँगवाकर और लाकर मेरे टेरेस गार्डन को समृद्ध करने में सहयोग दिया, जिससे मेरे जीवन में पुनः आशा, ऊर्जा और सृजन का संचार हुआ।"



महेश बंसल
इंदौर, मध्य प्रदेश

डॉ. गरिमा वैश्य के जीवन में संस्कारों की जड़ें गहरी हैं; उनके परदादा स्वर्गीय लाला भिखारीदास नारायणदास वैश्य मध्यप्रदेश चैंबर ऑफ कॉमर्स के संस्थापक सदस्यों में थे और सिंधिया राजवंश के कोषाध्यक्ष रहे। जिससे सेवा, अनुशासन और उत्तरदायित्व की परंपरा उन्हें विरासत में मिली। शिक्षा की शुरुआत सिंधिया कन्या विद्यालय से हुई और आगे चलकर जीवाजी विश्वविद्यालय से बी.एच.एम.एस. की डिग्री स्वर्ण पदक सहित प्राप्त कर उन्होंने चिकित्सा क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का प्रमाण दिया। नृत्य की आंतरिक पुकार उन्हें प्रयाग ले गई जहाँ इलाहाबाद विश्वविद्यालय से ओडिसी नृत्य में 'प्रभाकर' की उपाधि भी स्वर्ण पदक के साथ अर्जित की, और इस उच्च साधना में उन्हें सुप्रसिद्ध





नृत्यांगना सुजाता महापात्रा का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। संगीत के क्षेत्र में वे विख्यात सितार वादक पंडित नीलाद्री कुमार से सितार की शिक्षा ले रही हैं, जिससे उनके जीवन में राग और प्रकृति का अद्भुत संगम उपस्थित हुआ है। योग और नेचुरोपैथी में डिप्लोमा लेकर उन्होंने शरीर, मन और प्रकृति के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास किया है, और यही समग्र दृष्टि उनके बागवानी जीवन में भी स्पष्ट दिखाई देती है।

अपनी हवेली के सीमित क्षेत्र में विकसित सोलह टेरेस गार्डन आज एक विस्तृत वनस्पति संसार का रूप ले चुके हैं जहाँ एडेनियम (डेज़र्ट रोज), गुलाब, वाटर लिली, कमल, औषधीय जड़ी-बूटियाँ, फलदार वृक्ष, मौसमी और बारहमासी फूल, वायु शोधक पौधे, सकुलेंट, बोनसाई, ट्रे गार्डन और टेरायियम एक साथ जीवन का उत्सव रचते हैं। प्रतिदिन लगभग दो घंटे वे स्वयं खाद डालने, छँटाई करने, गमलों की शिफ्टिंग, सिंचाई, कीट नियंत्रण और पौधों की आवश्यकताओं को समझने में व्यतीत करती हैं, क्योंकि उनके लिए यह श्रम नहीं बल्कि ध्यान की प्रक्रिया है। वे किचन वेस्ट से होम कम्पोस्ट बनाती हैं, गाय के गोबर और सरसों की खली का उपयोग करती हैं, ऑर्गेनिक पेस्टिसाइड तैयार करती हैं, साथ ही आवश्यकता अनुसार डीएपी, एनपीके, एप्सम सॉल्ट और अन्य पोषक तत्वों का संतुलित प्रयोग करती हैं, जिससे उनकी बागवानी भावुकता और वैज्ञानिक दृष्टि दोनों का समन्वय बन जाती है।

उनकी साधना केवल छतों तक सीमित नहीं रही; एक दिन अकस्मात् सूचना मिली कि ग्वालियर के कलेक्टर अक्षय कुमार उनके कल्पवृक्ष टेरेस गार्डन का अवलोकन करने आ रहे हैं, और जब उन्होंने सहज भाव से पूछा कि क्या उन्होंने पौधों के साथ संगीत चिकित्सा का प्रयोग किया है, तब यह प्रश्न एक नए अध्याय का बीज बन गया, क्योंकि उसी दिन से डॉ. गरिमा ने अपने पौधों के मध्य बैठकर सितार साधना आरंभ की और उन्होंने अनुभव किया कि संगीत की तरंगें केवल वातावरण में नहीं, बल्कि पत्तियों और पुष्पों के कंपन में भी प्रतिध्वनित होती हैं, जिससे उन्हें और उनके पौधों दोनों को अद्भुत ऊर्जा प्राप्त होती है। इसी क्रम में नगर निगम के तत्कालीन कमिश्नर किशोर कन्याल



जी ने उन्हें ट्यूलिप उगाने के लिए प्रेरित किया, प्रारंभिक संकोच के बावजूद उन्होंने साहस किया और जब उन ट्यूलिप्स ने रंग बिखरे तो वह दृश्य उनके लिए आत्मविश्वास का पुष्पोत्सव बन गया। प्रकृति के प्रति उनके इस अनुराग ने उन्हें डैफोडिल उगाने की प्रेरणा भी दी, और विलियम वर्ड्सवर्थ की कविता की स्मृति के साथ जब वे सफलतापूर्वक खिले तो उन्हें लगा जैसे साहित्य, प्रकृति और साधना एक ही रेखा पर आकर मिल गए हों।

पर्यावरण दिवस पर स्वर्गीय श्रीमंत माधवराव सिंधिया साहब के मामा साहब सर ध्यानेंद्र सिंहजी का उनके गार्डन में अप्रत्याशित आगमन भी उनके जीवन का अविस्मरणीय क्षण रहा, क्योंकि प्रारंभ में उन्हें पहचान न पाने की सहज मानवीय स्थिति के बाद जब परिचय हुआ तो वह क्षण विनम्रता और गर्व का संगम बन





गया। बाद में केन्द्रीय मंत्री श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया द्वारा सम्मानित किया जाना और उनका यह कहना कि उन्हें ऐसा लगा जैसे वे स्वर्ग में आ गए हों, डॉ. गरिमा के लिए केवल प्रशंसा नहीं, बल्कि उनकी साधना की सार्वजनिक स्वीकृति थी।

अपने परदादा की फर्म “भिखारीदास नारायणदास” को पुनर्जीवित कर तथा होटल विवेक कॉन्टिनेंटल को “होटल KALPVIEW” के रूप में स्थापित कर उन्होंने यह सिद्ध किया कि परंपरा और आधुनिकता का संतुलन संभव है, और यह संतुलन तभी सार्थक होता है जब व्यक्ति अपने कार्य को पूजा समझकर करे, जैसा उन्हें अपनी माँ और गुरुजनों से सीख मिली कि जो भी करो, उसमें अपना शत-प्रतिशत दो, कठिनाइयों से विचलित हुए बिना लक्ष्य की ओर अग्रसर रहो।

डॉ. गरिमा वैश्य की जीवनयात्रा इस तथ्य का साक्ष्य है कि शोक को साधना में, अकेलेपन को हरियाली में और संघर्ष को सृजन में रूपांतरित किया जा सकता है, और उनकी सोलह छतें आज यह प्रमाणित करती हैं कि यदि मन में संकल्प हो तो सीमित आकाश भी एक विस्तृत वन बन सकता है, जहाँ प्रत्येक पत्ती जीवन का गीत गाती है और प्रत्येक पुष्प यह संदेश देता है कि प्रेम, श्रम और विश्वास से ही धरती सचमुच फूलों में हँसती है।



जीवन को समझना जरूरी है

हम और हमारा जीवन हर पल प्रकृति पर निर्भर हैं, उसके बिना हम कुछ नहीं हैं, बेहतर होगा हम उसे बेहतर बनाने में मददगार बनें।

-प्रकृति दर्शन, मासिक पत्रिका





फोटोग्राफ अखिल हार्डिया, इंदौर, मप्र

जलीय जीवों का महत्व, संकट और संरक्षण

● विश्व जलीय जीव दिवस पर खास

पृथ्वी पर जीवन केवल भूमि पर ही नहीं अपितु जल में भी बहुत बड़ी विविधताओं के साथ पाया जाता है। समुद्र, नदियाँ, झीलें और तालाब अनेक प्रकार के जलीय पशुओं का घर हैं। मछलियाँ, कछुए, डॉल्फिन, व्हेल और अनेक सूक्ष्म जीव जल पारिस्थितिकी तंत्र का एक महत्वपूर्ण भाग हैं। इन्हीं जलीय जीवों के संरक्षण एवं उनके महत्व के प्रति देश और समाज को जागरूक करने के उद्देश्य से विश्व जलीय पशु दिवस मनाया जाता है।

हमारी पृथ्वी पर जलीय पशुओं का महत्व

पृथ्वी पर पाए जाने वाले जलीय पशु जैसे मछलियाँ, व्हेल, डॉल्फिन, कछुए और अन्य समुद्री जीव प्रकृति के संतुलन को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये जीव समुद्र, नदियों, झीलों और तालाबों में रहते हैं और जल पारिस्थितिकी तंत्र का महत्वपूर्ण हिस्सा होते हैं।

पारिस्थितिकी संतुलन बनाए रखने में सहायक

जलीय पशु खाद्य श्रृंखला का महत्वपूर्ण भाग होते हैं। छोटे जीव बड़े जीवों के भोजन बनते हैं, जिससे प्राकृतिक संतुलन बना रहता है। यदि किसी एक प्रजाति की संख्या बहुत कम या अधिक हो जाती है तो, इसका प्रभाव पूरे पारिस्थितिकी तंत्र पर पड़ता है।

भोजन के प्रमुख स्रोत के रूप में

दुनिया के लाखों करोड़ों लोगों के लिए मछलियाँ एवं अन्य जलीय जीव भोजन का मुख्य स्रोत होते हैं। क्योंकि इनमें प्रोटीन और पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं, जो मानव स्वास्थ्य के लिए



सीमा शर्मा तमन्ना

नोएडा उत्तर प्रदेश





फोटोग्राफ अखिल हार्डिया, इंदौर, मप्र

अत्यंत लाभदायक हैं।

जैव विविधता की रक्षा

करने में सहायक जलीय पशु पृथ्वी की जैव विविधता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। समुद्र और नदियों में पाई जाने वाली विभिन्न प्रजातियाँ प्रकृति को समृद्ध और संतुलित बनाती हैं।

पर्यावरण को स्वच्छ बनाए रखने में सहायक कुछ जलीय जीव पानी को स्वच्छ रखने में मदद करते हैं जैसे वे पानी में जितनी भी गंदगी इकट्ठा होती है वे उसे हटाकर छोटे जीवों को खाकर जल को

साफ रखने में योगदान देते हैं

आर्थिक महत्व:- मछली पालन, समुद्री पर्यटन और अन्य समुद्री संसाधनों के कारण जलीय जीव कई देशों की अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाए रखने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

जलीय पशुओं के सामने खतरे

आज जलीय पशु अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना कर रहे हैं। समुद्र और नदियों में बढ़ता हुआ प्रदूषण, प्लास्टिक कचरा, तेल का रिसाव, अत्यधिक मछली पकड़ना और जलवायु परिवर्तन उनके जो उनके अस्तित्व के लिए खतरा बनते जा रहे हैं।

कई जलीय प्रजातियाँ विलुप्त हो चुकी हैं और कुछ धीरे-धीरे विलुप्त होने की कगार पर पहुँच रही हैं। यदि भविष्य में इन समस्याओं पर जल्दी ही ध्यान नहीं दिया गया तो भविष्य में कई महत्वपूर्ण जलीय जीव हमेशा के लिए समाप्त हो जाएंगे।

संरक्षण के उपाय

जलीय पशुओं की रक्षा के लिए हमें कई कदम उठाने चाहिए। इसके लिए हमें नदियों और समुद्रों को प्रदूषण से बचाना होगा। जिसमें, प्लास्टिक का उपयोग कम करना और मछली पकड़ने के नियमों का पालन करना व इसके साथ ही लोगों में जलीय जीवों के संरक्षण के प्रति जागरूकता फैलाना अत्यन्त आवश्यक है।

अंत में बस यही कहना चाहूंगी कि विश्व जलीय पशु दिवस जो हमें यह याद दिलाता है कि, जलीय जीव भी पृथ्वी की अमूल्य धरोहर हैं। उनका संरक्षण करना हमारे पर्यावरण और भविष्य के लिए बहुत आवश्यक है। यदि हम आज जलीय पशुओं की रक्षा करेंगे, तो आने वाली पीढ़ियाँ भी इस समृद्ध जैव विविधता का आनंद ले सकेंगी। यह सिर्फ एक दिन कहने या दिखावा करने से नहीं होगा अपितु, जल स्रोतों को प्रदूषण से बचाकर, जलीय एवं जीवों के संरक्षण के लिए प्रयास करने से होगी ताकि पृथ्वी पर जीवन का संतुलन बना रहे।





दर्शन मेनारिया को वन्यप्राणी मित्र अवॉर्ड

राजस्थान के सबसे बड़े वन्य जीव पुरस्कार का प्रदेश की राजधानी जयपुर में आयोजन हुआ। डब्ल्यू डब्ल्यू एफ इंडिया और प्रभा खेतान फाउंडेशन की ओर से पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में दिए जाने वाले राजस्थान के सबसे बड़े राज्य स्तरीय पुरस्कार वितरण के छठे संस्करण का आयोजन सोमवार को जयपुर पैलेस रोड स्थित होटल आईटीसी राजपूताना में हुआ। राज्य स्तरीय कार्यक्रम के दौरान प्रभा खेतान फाउंडेशन की अपरा कुछल, वी ककड़, राजस्थान वन विभाग के आला अधिकारी प्रधान मुख्य वन संरक्षक (हॉफ) पीके उपाध्याय, मुख्य वन्य जीव प्रतिपालक के सी ए अरुण प्रसाद, डब्ल्यूडब्ल्यूएफ के डायरेक्टर वाइल्डलाइफ एंड हैबिटेट यश सेठिया, प्रदेश समन्वयक राजस्थान अरुण सोनी, प्रसिद्ध पर्यावरणविद् हर्षवर्धन सिंह, भारतीय वन सेवा के सेवानिवृत्त वनाधिकारी राहुल भटनागर, राजस्थान वाइल्डलाइफ बोर्ड के सदस्य एवं पर्यावरणविद् राजपाल सिंह, आईएएस विक्रम सिंह जैसी पर्यावरण संरक्षण की दिग्गज हस्तियां मौजूद रही। इस दौरान दर्शन मेनारिया को वन्यप्राणी मित्र अवॉर्ड तथा वन विभाग के फ्लाईंग स्क्वाड को मिला मछली पुरस्कार प्रदान किया गया। राज्य भर से आए आवेदनों में से विजेताओं का चयन किया गया। पहली बार उदयपुर को दोनों ही श्रेणियों में पुरस्कार प्राप्त होने का

गौरव मिला। वन विभाग उदयपुर उत्तर डिवीजन के रामसर साइट मेनार के पर्यावरणविद् दर्शन मेनारिया को वन्यप्राणी मित्र पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इसके तहत प्रशस्ति पत्र के साथ ही पचास हजार रूपए पारितोषिक स्वरूप प्रदान किए गए।

उल्लेखनीय है कि दर्शन मेनारिया राजकीय सेवा में व्याख्याता होने के साथ ही पर्यावरणविद् व पक्षी मित्र के रूप में भी जाने जाते हैं। मछली पुरस्कार वन विभाग उदयपुर वन्यजीव मंडल उड़नदस्ता के 5 सदस्यों की टीम लीडर रेंज ऑफिसर सीताराम मीणा, अजीत सिंह राणावत, जितेंद्र सिंह, द्वारका प्रसाद शर्मा और अशोक नारायण जोशी को प्रशस्ति पत्र और कुल एक लाख पचास हजार रुपये में से प्रत्येक को तीस हजार की राशि पारितोषिक स्वरूप प्रदान की गई। डब्ल्यू डब्ल्यू एफ इंडिया के स्टेट कॉर्डिनेटर अरुण सोनी ने बताया कि प्रत्येक वर्ष दो श्रेणियों में ये पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं। पहली श्रेणी में वन्य प्राणी मित्र पुरस्कार पर्यावरण के क्षेत्र में मानव वन्यजीव संघर्ष को कम करने में उल्लेखनीय काम करने वाले व्यक्तियों और समुदाय के सदस्यों एवं दूसरी श्रेणी मछली पुरस्कार उल्लेखनीय है कि मछली पुरस्कार रणथम्भौर की प्रसिद्ध बाघिन मछली टी 16 की स्मृति में राज्य में उल्लेखनीय कार्य करने वाले वन विभाग के कर्मचारियों को उक्त पुरस्कार दिया जाता रहा है।





“परिंडे लगाकर बचाएँ प्रकृति”

विश्व गौरैया दिवस पर दिव्यांग पर्यावरण प्रेमी दिनेश चौहान की अनूठी पहल

रामदेवरा (जैसलमेर)। विश्व गौरैया दिवस के पावन अवसर पर नई बस्ती, रामदेवरा में पर्यावरण संरक्षण की एक प्रेरणादायक मिसाल देखने को मिली। दिव्यांग पर्यावरण प्रेमी दिनेश चौहान ने माता-बहनों के सहयोग से पक्षियों के लिए जल से भरे परिंडे लगाकर प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता और जिम्मेदारी का सशक्त संदेश दिया।

तेज गर्मी और जल संकट के इस दौर में, जब पक्षियों के लिए पानी का एक-एक बूंद अमृत के समान है, ऐसे समय में दिनेश चौहान की यह पहल न केवल सराहनीय है, बल्कि समाज को जागरूक करने वाली भी है। उन्होंने बताया कि आधुनिक जीवनशैली और बढ़ते शहरीकरण के कारण गौरैया सहित कई पक्षियों का अस्तित्व खतरे

में है, जिसे बचाने के लिए सामूहिक प्रयास आवश्यक हैं।

इस अभियान में क्षेत्र की माता-बहनों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया और अपने घरों के बाहर नियमित रूप से परिंडे लगाने एवं उनमें पानी भरने का संकल्प लिया। पूरे क्षेत्र में इस पहल ने एक सकारात्मक ऊर्जा का संचार किया और लोगों को प्रकृति के प्रति अपनी जिम्मेदारी का एहसास कराया।

स्थानीय लोगों ने दिनेश चौहान के इस प्रयास की भूरी-भूरी प्रशंसा करते हुए इसे समाज के लिए प्रेरणास्रोत बताया। यह छोटी-सी पहल एक बड़े बदलाव की दिशा में उठाया गया महत्वपूर्ण कदम है, जो आने वाले समय में पर्यावरण संरक्षण के जनआंदोलन का रूप ले सकता है।



ईश्वर सेवा ही है

गर्मियों में प्यासे पक्षियों की सेवा भी उस परमपिता ईश्वर की ही सेवा है,
प्यासे पक्षियों को जल देकर हम अपने मानवीय होने का भी फर्ज निभाते हैं

-प्रकृति दर्शन, मासिक पत्रिका





Image Credit by Google

केंद्र सरकार की महत्वपूर्ण पहल- अटल भूजल योजना

भारत आज जिस सबसे गंभीर पर्यावरणीय और संसाधन संकट का सामना कर रहा है, उसमें भूजल संकट प्रमुख है। देश के कई हिस्सों में भूजल स्तर तेजी से गिर रहा है, जिससे पेयजल, कृषि और आजीविका पर गहरा प्रभाव पड़ रहा है। इसी चुनौती से निपटने के लिए केंद्र सरकार ने अटल भूजल योजना (Atal Bhujal Yojana) की शुरुआत की, जो सामुदायिक भागीदारी पर आधारित एक महत्वपूर्ण पहल है।

इस योजना की शुरुआत 25 दिसंबर 2019 को पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की जयंती के अवसर पर की गई थी। इसका उद्देश्य भूजल के अत्यधिक दोहन को रोकना और जल संरक्षण के लिए स्थानीय स्तर पर जागरूकता तथा सहभागिता को बढ़ावा देना था। यह योजना विश्व बैंक की सहायता से संचालित की जा रही है और इसका फोकस उन राज्यों पर है जहां भूजल का स्तर तेजी से गिर रहा है, जैसे—गुजरात, हरियाणा, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान और उत्तर प्रदेश।

अटल भूजल योजना को शुरू में “अटल जल योजना” के रूप में प्रस्तावित किया गया था, लेकिन बाद में इसे अधिक स्पष्ट और उद्देश्यपरक बनाने के लिए इसका नाम बदलकर “अटल भूजल योजना” रखा गया। यह नाम परिवर्तन योजना के वास्तविक लक्ष्य—भूजल प्रबंधन—को सीधे दर्शाता है।

इस योजना का मूल उद्देश्य केवल सरकारी हस्तक्षेप तक सीमित नहीं है, बल्कि यह “सामुदायिक भागीदारी” पर आधारित है। इसके तहत गांवों में जल समितियों का गठन किया जाता है, जो स्थानीय स्तर पर जल उपयोग और संरक्षण की निगरानी करती हैं। ग्रामीणों को यह सिखाया जाता है कि वे वर्षा जल संचयन, जल का संतुलित उपयोग और फसलों के चयन में बदलाव जैसे उपाय अपनाएं। इससे न केवल जल की बचत होती है, बल्कि कृषि की स्थिरता भी बढ़ती है।

इस योजना के सकारात्मक प्रभाव अब धीरे-धीरे सामने आने लगे हैं। कई क्षेत्रों में भूजल स्तर के गिरने की गति में कमी आई है और कुछ स्थानों पर सुधार भी दर्ज किया गया है। किसानों में सूक्ष्म सिंचाई तकनीकों (जैसे ड्रिप और स्प्रिंकलर) के उपयोग की प्रवृत्ति बढ़ी है, जिससे पानी की खपत कम हुई है। इसके अलावा, लोगों में जल संरक्षण के प्रति जागरूकता भी बढ़ी

है, जो इस योजना की सबसे बड़ी सफलता मानी जा सकती है।

अटल भूजल योजना का एक महत्वपूर्ण पहलू है डेटा आधारित निर्णय (Data-driven approach)। इसके तहत भूजल स्तर की नियमित मॉनिटरिंग की जाती है और उसी के आधार पर योजनाएं बनाई जाती हैं। इससे संसाधनों का बेहतर प्रबंधन संभव हो पाया है।

हालांकि, इस योजना के सामने कुछ चुनौतियां भी हैं। कई क्षेत्रों में अभी भी जागरूकता की कमी है और पारंपरिक खेती पद्धतियों के कारण जल का अत्यधिक उपयोग जारी है। इसके अलावा, जलवायु परिवर्तन के कारण अनिश्चित वर्षा भी भूजल पुनर्भरण को प्रभावित करती है। इसलिए, इस योजना की सफलता के लिए निरंतर प्रयास और जनभागीदारी अत्यंत आवश्यक है।

अंततः, अटल भूजल योजना केवल एक सरकारी योजना नहीं, बल्कि एक सामाजिक आंदोलन के रूप में उभर रही है। यह हमें यह सिखाती है कि जल संकट का समाधान केवल नीतियों से नहीं, बल्कि सामूहिक प्रयासों और जिम्मेदारी से ही संभव है। यदि इस दिशा में निरंतर प्रयास किए गए, तो आने वाले वर्षों में भारत अपने भूजल संकट को काफी हद तक नियंत्रित कर सकता है।

संदर्भ

1. जल शक्ति मंत्रालय, भारत सरकार – अटल भूजल योजना आधिकारिक पोर्टल
2. विश्व बैंक (World Bank) – Atal Bhujal Yojana Project Documents
3. नीति आयोग (NITI Aayog) – Composite Water Management Index Report
4. केंद्रीय भूजल बोर्ड (CGWB) – Groundwater Assessment Reports
5. PIB (Press Information Bureau) – सरकारी प्रेस विज्ञप्तियां

(पीडी फीचर)



Image Credit by Ravi Kant : <https://www.pexels.com>

अबकी गर्मी आईये नैनीताल

● उत्तराखंड पर्यटन- झीलों का शहर नैनीताल

उत्तराखंड के कुमाऊं क्षेत्र में स्थित नैनीताल भारत के सबसे लोकप्रिय हिल स्टेशनों में से एक है। समुद्र तल से लगभग 2,000 मीटर की ऊंचाई पर बसा यह शहर अपनी प्राकृतिक सुंदरता, शांत वातावरण और झीलों के लिए प्रसिद्ध है। “झीलों का शहर” कहलाने वाला नैनीताल हर वर्ष लाखों पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है। इसका नाम यहां स्थित प्रसिद्ध नैनी झील से पड़ा है, जो इस शहर की पहचान मानी जाती है।

नैनीताल अपनी खूबसूरत झीलों, पहाड़ों और सुहावने मौसम के कारण विशेष रूप से प्रसिद्ध है। यहां की हरियाली, ठंडी हवाएं और शांत वातावरण शहरों की भागदौड़ से दूर एक सुकून भरा अनुभव प्रदान करते हैं। नैनी झील के किनारे नौकायन (Boating), मॉल रोड पर घूमना और आसपास की पहाड़ियों से सूर्योदय और सूर्यास्त का दृश्य देखना पर्यटकों के लिए खास आकर्षण होता है। इसके अलावा, यहां स्थित नैना देवी मंदिर धार्मिक आस्था का प्रमुख केंद्र है, जहां बड़ी संख्या में श्रद्धालु दर्शन करने आते हैं।

पर्यटकों के आने का सबसे अच्छा समय मार्च से जून और फिर सितंबर से नवंबर तक माना जाता है। गर्मियों में यहां का मौसम ठंडा और सुहावना रहता है, जिससे यह मैदानी क्षेत्रों की गर्मी से राहत पाने के लिए आदर्श स्थान बन जाता है। वहीं सर्दियों में, खासकर दिसंबर और जनवरी में, यहां बर्फबारी देखने के लिए भी पर्यटक बड़ी संख्या में पहुंचते हैं। बर्फ से ढकी पहाड़ियां नैनीताल की खूबसूरती को और भी बढ़ा देती हैं।

दिल्ली से नैनीताल पहुंचना काफी आसान है। सड़क मार्ग सबसे लोकप्रिय विकल्प है। दिल्ली से नैनीताल की दूरी लगभग 300 किलोमीटर है और यात्रा में 6-7 घंटे का समय लगता है। आमतौर पर यह रूट अपनाया जाता है:

दिल्ली गाजियाबाद हापुड़ मुरादाबाद रुद्रपुर हल्द्वानी नैनीताल।

हल्द्वानी और काठगोदाम नैनीताल के सबसे नजदीकी रेलवे स्टेशन हैं, जहां से टैक्सी या बस के माध्यम से 30-35 किलोमीटर की दूरी तय करके नैनीताल पहुंचा जा सकता है। निकटतम हवाई अड्डा पंतनगर है, जो लगभग 70 किलोमीटर दूर स्थित है।

नैनीताल में घूमने के लिए कई प्रमुख पर्यटन स्थल हैं, जो इसे और भी खास बनाते हैं। स्नो व्यू प्वाइंट से हिमालय की बर्फीली चोटियों का अद्भुत दृश्य दिखाई देता है। टिफिन टॉप (डोरोथी सीट) ट्रेकिंग और पिकनिक के लिए प्रसिद्ध है। नैना पीक नैनीताल की सबसे ऊंची चोटी है, जहां से पूरे शहर का मनोरम दृश्य देखा जा सकता है। इसके अलावा, मॉल रोड, इको केव गार्डन, गवर्नर हाउस (राजभवन) और भीमताल, नौकुचियाताल जैसी आसपास की झीलें भी पर्यटकों को आकर्षित करती हैं।

अंततः, नैनीताल केवल एक पर्यटन स्थल नहीं, बल्कि प्रकृति के करीब जाने और सुकून पाने का एक अनुभव है। चाहे आप रोमांच के शौकीन हों, प्रकृति प्रेमी हों या धार्मिक आस्था से जुड़े हों—नैनीताल हर किसी के लिए कुछ न कुछ खास जरूर लेकर आता है।

संदर्भ

1. उत्तराखंड पर्यटन विभाग (Uttarakhand Tourism Official Website)
2. Incredible India (Ministry of Tourism, Government of India)
3. IRCTC और उत्तर रेलवे यात्रा जानकारी
4. कुमाऊं क्षेत्र पर्यटन गाइड
5. विभिन्न यात्रा ब्लॉग एवं स्थानीय स्रोत

(पीडी फीचर)

Image Credit by Ravi Kant : <https://www.pexels.com>

गर्मियों में लीजिए साहस, रोमांच और जोशीले आनंद का मजा



नलिन खोईवाल
इंदौर, मध्य प्रदेश

जिंदादिली का नाम है जिंदगी। जीवन एक चुनौती है, जिसने इस चैलेंज को साहस, रोमांच और जोश के साथ स्वीकार कर लिया, सही मायनों में उसने जिंदगी का असली मजा पा लिया। व्यस्ततम जिंदगी में से कुछ लम्हें चुराकर प्रकृति की हसीन वादियों में गर्मियों की छुट्टियों का आनंद लें। प्रकृति का विलक्षण, अनुपम, अद्भुत सौंदर्य आपको पुकार रहा है, लोरियां देकर अपनी गोद में थपथपाने के लिए और झूला झूलने के लिए। प्रकृति बाहें फैलाकर आपका अभिनंदन करने को आतुर है।

चारों ओर बिखरी हरी-भरी वसुंधरा आपके स्वागत में पलक पांवड़े बिछाए मुन्तजिर है। पंछियों का कलरव जैसे आपको अपनी ओर बुला रहा हो, झरने हँस-हँस कर खुशी के गीत गा रहे हैं, नदियों का शीत स्पंदन आपकी सांवली सलोनी त्वचा को छूने को मानो बताव है, श्वेत मखमली चादर ओढ़े धरा राह में रंग-बिरंगे

सुंदर, मनभावन, लुभावने पुष्प बिछाए आपका सदियों से इंतजार कर रही है। हमने प्रकृति के इस विलक्षण सौंदर्य को सिर्फ ख्वाबों में ही निहारा होगा। क्यों ना हम प्रत्यक्ष रूबरू होकर इन हसीन नजारों को अपनी आगोश में भर लें और अपने सुनहले सपनों को करें हकीकत में साकार। तो निकल पड़िए किसी ऐसे ही साहसिक, रोमांचित और जोशीले अभियान पर अपने परिवार व अपने साथियों के साथ घुमंतू बनकर घूमने के लिए, क्योंकि घूमने से ही आनंद और ज्ञान की प्राप्ति होती है।

जाने के पूर्व की तैयारियां

यदि आप किसी संस्था के पर्वतारोहण व साहसिक यात्रा के अभियान पर जा रहे हैं तो प्रतिदिन सुबह घूमना शुरू कर दें, क्योंकि



वहां आपको प्रतिदिन कुछेक किमी पैदल चलना पड़ सकता है। कम से कम सामान अपने साथ ले जाएं। एक पीटू (रुकसेट) हो, उसमें थोड़ा बहुत जरूरत का सामान, टॉर्च, जरूरी दवाइयां, दो जोड़ी कपड़े पानी की बॉटल, थाली-कटौरी, एक चादर व हल्के ऊनी वस्त्र साथ होना चाहिए। पहनावा आरामदायक हो, जूते भी पैरों में कम्फर्ट हों। हसीन लम्हों को कैद करने के लिए कैमरा भी हो, खट्टे-मीठे अनुभव लिखने के लिए एक नोट बुक व पेन भी हो।

गंतव्य स्थल पहुंचने पर क्या करें

जिस स्थल पर आपको रिपोर्टिंग करना है, वहां एक दिन पूर्व ही पहुँच जाएं। पहुँचते ही अपना पंजीयन करावें व तंबू नंबर आवंटित कराकर वहां सामान व्यवस्थित कर दें और पूरे कार्यक्रम का शिड्यूल पता कर लें। अनुशासन को कभी नहीं तोड़े, नियमों का सदा पालन करें। बताए गए निर्धारित क्षेत्र में ही भ्रमण करें। उससे बाहर निकलने का कतई प्रयास न करें, क्योंकि जंगल में खूंखार जानवरों का खतरा हमेशा बना रहता है। समूह में ही यात्रा करें व अकेले घूमने का प्रयास न करें।

यात्रा के दौरान कर्तव्यों का पालन

निर्धारित समयावधि में ही अपने कार्यों को अंजाम दें। समय पर उठें, समय पर नाश्ता व भोजन करें, समय पर सोएं व अपना हर काम समय पर ही करें। शाकाहारी भोजन ही करें। यात्रा में फल अधिक खाएं, तेलयुक्त चीजों से परहेज करें। टेंट के बाहर ही जूते उतारें, मोमबत्ती न जलाएं, मनोरंजन ऐसा करें जिससे कि दूसरों के लिए परेशानी नहीं हो।

यात्रा के दरम्यान क्या नहीं करें

प्रतिबंधित क्षेत्र में प्रवेश नहीं करें। धूम्रपान, मद्यपान, अन्य मादक पदार्थों सहित अन्य प्रतिबंधित वस्तुओं का सेवन नहीं करें। गंदगी न फैलाएं, पर्यावरण को स्वच्छ बनाए रखें। पालीथिन, रैपर्स, पाउच रास्ते में न फेंके, उन्हें एक थैली में इकट्ठा करते जाएं तथा उन्हें बाहर गंतव्य तक पहुंचने पर डस्टबिन अथवा निर्धारित स्थल पर ही फेंके। इससे प्रकृति का सौंदर्य नष्ट नहीं होगा। रास्ते में पेड़-पौधों को नुकसान न पहुँचाएं, तालाब, नदी, झरने का पानी गंदा न करें और न ही पानी में पत्थर उछालें। धार्मिक पूजा स्थलों, राष्ट्रीय स्मारकों, शासकीय संपत्ति को हानि न पहुँचाएं और न ही उन्हें नष्ट करें। पशु-पक्षियों का शिकार न करें और न ही जंगल में आग जलाएं। चर्चा के दौरान आरोप-प्रत्यारोप से बचें, व्यक्तिगत टिप्पणी न करें, किसी की भावनाओं को ठेस न पहुँचाएं। जातिगत व धर्म विशेष संबंधी टिप्पणी कतई न करें।

रोमांचक यात्रा के मध्य बरती जाने वाली सावधानियां

पर्वतारोहण अभियान के दौरान आपको हजारों फीट की ऊँचाई पर चढ़ना पड़ सकता है। इस दौरान आप पैरासेलिंग, रॉक क्लाइंबिंग, रिवर क्रॉसिंग व राफ्टिंग, पैराग्लाइडिंग, स्किंग, ट्रैकिंग व रेपलिंग भी करेंगे, जिसमें विशेष एहतिआत बरतने की आवश्यकता है। ये ऐसे कार्यक्रम हैं जो आपकी जिंदगी में एक नया साहस, रोमांच व जोश भर देंगे व आप बन जाएंगे एक जिंदादिल इंसान। ट्रैकिंग के दौरान दौड़ने का प्रयास न करें, आराम से ही चलें।

कंटीली झाड़ियों, पहाड़ी दरारों, झरने, नदी किनारे स्थित पत्थरों से चलते समय सावधान रहें। संकरे रास्ते में क्रॉसिंग व ओवरटेकिंग से बचिए। तन-मन दोनों पर पूर्ण नियंत्रण रखें। पहाड़ से उतरते समय वजन को आगे रखते हुए घुटनों को मोड़ते हुए आगे बढ़िए, नर्म जमीन पर एड़ी दबाकर चलें। जब सांस फूलने लगे तब पेड़ या पत्थर के विपरीत झुक जाएं या लेट जाएं, पैरों को ऊपर उठाइए। इससे रक्त संचरण संतुलित होगा व थकावट दूर होगी। सुस्ताने के लिए ठहराव जल्दी-जल्दी नहीं होना चाहिए। ज्यादा ठहराव से चाल की लय खत्म हो जाती है तथा समय भी नष्ट होता है। बारिश या आंधी के समय खुद को बचाने के लिए गुफा या बड़े पत्थर, पेड़ की आड़ से आप बच सकते हैं या अन्य कोई सुरक्षित आश्रय स्थल खोजें। पहाड़ के पत्थर लुढ़कने वाले हों तब विशेष सावधान रहें। घाटी की बजाय, पहाड़ की तरफ सुरक्षित चलें। हमेशा झरने का जल रूमाल से छानकर पीएं, कभी भी अधिक पानी मत पीजिए, इससे मांसपेशियां ऐंठ सकती हैं। कैम्प लीडर के निर्देशों का सदा पालन करें, जरूरत पड़ने पर लीडर से सलाह लें। बीमारी, जोखिम, घटना अथवा अन्य खतरे की स्थिति में लीडर को सूचित कर अपने साथियों को आगाह करें। लगातार नियमित अंतराल पर ज्यादा से ज्यादा तरल भोजन, चाय, काफी कोकोआ या अन्य पेय लेते रहिए।

यदि आप इन टिप्स का पालन करेंगे तो आपकी यात्रा सफल, सुखद व सुरक्षित और आनंदकारी तो होगी ही, वह साहस, रोमांच व जोश से भरपूर भी होगी। तो आप तैयार हैं एक ऐसी यात्रा के लिए जो आपने कभी नहीं की है तथा जिसके करने के बाद आपकी जिंदगी में बदलाव आ सकता है। क्या आप प्रकृति के प्रेमी मित्र बनना नहीं चाहेंगे, आप ऐसी यात्रा पर हो, जहां पत्थर तो क्या पर्वत भी शीश झुकाते हैं। कहीं किसी रोज आपको पंछी जगाएं तथा झरने हंसाएं। साहसी मित्रों के लिए संदेश हैं-

जीवन के ओथके पखेरू तुम मत हिम्मत हारो,
पंखों में भविष्य बंदी है मत अतीत की ओर निहारो,
पृथ्वी छूटी तो क्या उड़ने को आकाश बहुत है,
जीवन में आशा कम विश्वास बहुत है।



हम अपनी धरती को सुरक्षित और सुंदर बना सकते हैं

प्रकृति हमारी जीवनदायिनी है। स्वच्छ वायु, शुद्ध जल, हरियाली और जैव विविधता—ये सभी हमें पृथ्वी से ही प्राप्त होते हैं। लेकिन आधुनिक जीवनशैली, बढ़ते प्रदूषण और प्लास्टिक के अत्यधिक उपयोग ने पृथ्वी के संतुलन को गंभीर रूप से प्रभावित किया है। इसी जागरूकता को बढ़ाने के उद्देश्य से प्रत्येक वर्ष 22 अप्रैल को अंतर्राष्ट्रीय पृथ्वी दिवस मनाया जाता है।

इस दिवस का मुख्य उद्देश्य लोगों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करना तथा उन्हें प्रकृति के प्रति अपनी जिम्मेदारियों का एहसास कराना है। आज के समय में प्लास्टिक प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई और जल संकट जैसी समस्याएँ तेजी से बढ़ रही हैं। यदि समय रहते इन पर नियंत्रण नहीं किया गया, तो आने वाली पीढ़ियों को इसका गंभीर परिणाम भुगतना पड़ेगा।

इसी संदर्भ में विद्यालयों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। हमारे विद्यालय प्राथमिक विद्यालय पनवारी, आगरा में भी विद्यार्थियों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करने के लिए समय-समय पर विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। इसी क्रम में एक विशेष गतिविधि आयोजित की गई, जिसमें कक्षा 2 के विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

इस गतिविधि का उद्देश्य बच्चों को प्लास्टिक के दुष्प्रभावों के बारे में समझाना तथा उन्हें इसके उपयोग से बचने के लिए प्रेरित करना था। बच्चों को बताया गया कि प्लास्टिक पर्यावरण को लंबे समय तक नुकसान पहुँचाता है और यह न तो आसानी से नष्ट होता है और न ही पुनः उपयोग में लाया जा सकता है।

गतिविधि के दौरान बच्चों को प्लास्टिक की थैलियों का उपयोग न करने की सीख दी गई और उसके स्थान पर कागज के थैले बनाना सिखाया गया। बच्चों ने अपने हाथों से सुंदर-सुंदर कागज के थैले तैयार किए और उन पर “Save Water”, “Say No to Plastic” जैसे प्रेरणादायक संदेश एवं आकर्षक चित्र बनाए। इस प्रक्रिया से बच्चों की रचनात्मकता का विकास हुआ और उनमें पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी की भावना भी उत्पन्न हुई।

नीचे दिए गए चित्र में कक्षा 2 के छात्र-छात्राएँ अपने द्वारा बनाए गए कागज के थैलों के साथ दिखाई दे रहे हैं, जो इस सफल गतिविधि की झलक प्रस्तुत करता है। यह चित्र इस बात का प्रमाण है कि यदि बच्चों को प्रारंभ से ही सही दिशा दी जाए, तो वे पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

अंततः, हमें यह समझना होगा कि पृथ्वी हमारी नहीं, बल्कि हम पृथ्वी के हैं। यदि हम आज से ही छोटे-छोटे प्रयास करें—जैसे प्लास्टिक का कम उपयोग, वृक्षारोपण, जल संरक्षण—तो हम अपनी धरती को सुरक्षित और सुंदर बना सकते हैं। यही पृथ्वी दिवस का सच्चा उद्देश्य है।



ज्योति जैन

आगरा, उत्तर प्रदेश शिक्षिका,
पर्यावरण संरक्षण पर सतत लेखना





फोटोग्राफ अलेप्पी (अलाप्पुझा), केरल

ब्लू इकोनॉमी: समुद्र से समृद्धि की सतत और समावेशी राह



विभा कनन

कोयम्बतूर,
तमिलनाडु, (शिक्षिका)

जल ही जीवन है—यह कथन केवल दार्शनिक सत्य नहीं, बल्कि वैज्ञानिक और आर्थिक यथार्थ भी है। मानव सभ्यता का आरंभ नदियों और समुद्रों के किनारे हुआ, और आज भी विश्व की बड़ी आबादी तटीय क्षेत्रों में निवास करती है। समुद्रों ने मानव को भोजन, व्यापार, परिवहन, ऊर्जा और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के अवसर दिए हैं। 21वीं सदी में जब भूमि-आधारित संसाधनों पर दबाव बढ़ रहा है और जलवायु परिवर्तन जैसी चुनौतियाँ सामने हैं, तब समुद्री संसाधनों के संतुलित और सतत उपयोग की अवधारणा अत्यंत प्रासंगिक हो गई है। यही विचार “ब्लू इकोनॉमी” के रूप में विकसित हुआ है।

ब्लू इकोनॉमी केवल समुद्री अर्थव्यवस्था का विस्तार नहीं, बल्कि एक ऐसी समग्र विकास दृष्टि है जो आर्थिक समृद्धि, सामाजिक समावेशन और पर्यावरण संरक्षण—इन तीनों को साथ लेकर चलती है। भारत जैसे विशाल तटीय देश के लिए, जिसकी समुद्री तटरेखा 7500 किलोमीटर से अधिक लंबी है और जो हिंद महासागर क्षेत्र में रणनीतिक स्थिति रखता है, ब्लू इकोनॉमी भविष्य की विकास-नीति का आधार बन सकती है।

ब्लू इकोनॉमी की अवधारणा और दर्शन

ब्लू इकोनॉमी का मूल उद्देश्य समुद्री संसाधनों का उपयोग इस प्रकार करना है कि वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताएँ पूरी हों, परंतु भविष्य की पीढ़ियों के अधिकारों से समझौता न हो। यह अवधारणा “सतत विकास” (Sustainable Development) की भावना से जुड़ी है।

पारंपरिक समुद्री अर्थव्यवस्था में संसाधनों के अधिकतम दोहन पर बल दिया जाता था, परंतु ब्लू इकोनॉमी संसाधनों के संरक्षण और पुनर्स्थापन पर भी समान ध्यान देती है। इसमें मत्स्य पालन, समुद्री परिवहन, बंदरगाह विकास, तटीय पर्यटन, अपतटीय ऊर्जा, समुद्री जैव-प्रौद्योगिकी, खनिज

दोहन और समुद्री अनुसंधान जैसे क्षेत्रों को समाहित किया जाता है।

संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों में लक्ष्य 14—“जल के नीचे जीवन”—समुद्री संसाधनों के संरक्षण और सतत उपयोग पर बल देता है। यह लक्ष्य स्पष्ट करता है कि समुद्र मानव जाति की साझी धरोहर हैं और उनका संतुलित उपयोग ही वैश्विक स्थिरता का आधार है।

भारत का समुद्री इतिहास और वर्तमान परिप्रेक्ष्य

भारत का समुद्री इतिहास अत्यंत गौरवपूर्ण रहा है। सिंधु घाटी सभ्यता के लोटल बंदरगाह से लेकर चोल साम्राज्य के समुद्री अभियानों तक, भारत ने समुद्र के माध्यम से व्यापार और सांस्कृतिक संपर्क स्थापित किए। मसालों, वस्त्रों और धातुओं का निर्यात समुद्री मार्गों से ही होता था।

औपनिवेशिक काल में समुद्री व्यापार ने नई दिशा ली, परंतु स्वतंत्रता के बाद भारत ने अपनी समुद्री नीति को पुनर्संगठित किया। आज भारत वैश्विक व्यापार का एक महत्वपूर्ण केंद्र है और विश्व व्यापार का लगभग 90 प्रतिशत (मात्रा के आधार पर) समुद्री मार्गों से संचालित होता है।

भारत सरकार ने बंदरगाह-आधारित विकास को बढ़ावा देने के लिए सागरमाला परियोजना प्रारंभ की है। इसका उद्देश्य बंदरगाहों का आधुनिकीकरण, तटीय औद्योगिक गलियारों का विकास और लॉजिस्टिक लागत में कमी लाना है। इसके साथ ही समुद्री सुरक्षा और सामरिक मजबूती में भारतीय नौसेना की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, जो समुद्री सीमाओं की रक्षा के साथ अंतरराष्ट्रीय सहयोग को भी सुदृढ़ करती है।





फोटोग्राफ अलेप्पी (अलाप्पुझा), केरल

ब्लू इकोनॉमी के प्रमुख क्षेत्र

1. मत्स्य पालन और जलीय कृषि

भारत विश्व के प्रमुख मत्स्य उत्पादक देशों में शामिल है। तटीय राज्यों—जैसे केरल, तमिलनाडु, गुजरात और पश्चिम बंगाल—में लाखों परिवार मत्स्य पालन पर निर्भर हैं। यह क्षेत्र न केवल रोजगार प्रदान करता है, बल्कि पोषण सुरक्षा में भी योगदान देता है।

सतत मत्स्य प्रबंधन, समुद्री पारिस्थितिकी की रक्षा और आधुनिक तकनीकों का उपयोग इस क्षेत्र को अधिक उत्पादक बना सकता है। गहरे समुद्र में मत्स्य पालन, एक्वाकल्चर (जलीय कृषि) और मूल्य संवर्धन से निर्यात में वृद्धि संभव है।

2. समुद्री परिवहन और बंदरगाह विकास

समुद्री परिवहन वैश्विक व्यापार की रीढ़ है। भारत के प्रमुख बंदरगाह—मुंबई, चेन्नई, कोलकाता, विशाखापट्टनम—देश की अर्थव्यवस्था को गति देते हैं।

मुंबई पोर्ट ट्रस्ट जैसे संस्थान अंतरराष्ट्रीय व्यापार के महत्वपूर्ण केंद्र हैं। बंदरगाहों के आधुनिकीकरण, डिजिटलीकरण और हरित प्रौद्योगिकी के उपयोग से लॉजिस्टिक दक्षता बढ़ाई जा सकती है।

हरित बंदरगाह (Green Ports) की अवधारणा के अंतर्गत स्वच्छ ऊर्जा, अपशिष्ट प्रबंधन और कार्बन उत्सर्जन में कमी पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

3. समुद्री पर्यटन

समुद्री पर्यटन ब्लू इकोनॉमी का उभरता हुआ क्षेत्र है। गोवा के समुद्र तट, अंडमान-निकोबार के द्वीप, लक्षद्वीप की प्रवाल भित्तियाँ और केरल के बैकवॉटर विश्व स्तर पर आकर्षण का केंद्र हैं।

क्रूज पर्यटन, जल-क्रीड़ाएँ और इको-टूरिज्म रोजगार सृजन के साथ स्थानीय अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाते हैं। परंतु अनियंत्रित पर्यटन से तटीय पारिस्थितिकी तंत्र को नुकसान हो सकता है, इसलिए संतुलित नीति आवश्यक है।

4. अपतटीय नवीकरणीय ऊर्जा

ऊर्जा संकट और जलवायु परिवर्तन की चुनौती के बीच समुद्र स्वच्छ ऊर्जा का स्रोत बनकर उभरा है। अपतटीय पवन ऊर्जा, ज्वारीय ऊर्जा

और तरंग ऊर्जा भविष्य की हरित अर्थव्यवस्था का आधार बन सकती हैं। भारत ने अपतटीय पवन ऊर्जा को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय समुद्री पवन ऊर्जा मिशन की दिशा में कदम बढ़ाए हैं। यह पहल ऊर्जा आत्मनिर्भरता और कार्बन उत्सर्जन में कमी की दिशा में महत्वपूर्ण है।

5. समुद्री जैव-प्रौद्योगिकी और खनिज संसाधन

समुद्र में असंख्य सूक्ष्मजीव, शैवाल और जैविक संसाधन पाए जाते हैं, जिनका उपयोग औषधि, जैव-ईंधन और कॉस्मेटिक उद्योग में किया जा सकता है। समुद्री जैव-प्रौद्योगिकी अनुसंधान का नया क्षेत्र है, जिसमें अपार संभावनाएँ हैं।

इसके अतिरिक्त, समुद्र तल में बहुमूल्य खनिज—जैसे पॉलीमेटालिक नोड्यूल—पाए जाते हैं, जिनका उपयोग आधुनिक उद्योगों में होता है। परंतु इन संसाधनों का दोहन पर्यावरणीय संतुलन को ध्यान में रखकर ही किया जाना चाहिए।

पर्यावरणीय चुनौतियाँ और संरक्षण

ब्लू इकोनॉमी का मूल आधार पर्यावरण संरक्षण है। आज समुद्री प्रदूषण एक गंभीर समस्या बन चुका है। प्लास्टिक कचरा, औद्योगिक अपशिष्ट, तेल रिसाव और रासायनिक प्रदूषण समुद्री जीवन के लिए खतरा हैं।

जलवायु परिवर्तन के कारण समुद्र का तापमान बढ़ रहा है, जिससे प्रवाल भित्तियाँ (Coral Reefs) नष्ट हो रही हैं। समुद्र-स्तर वृद्धि से तटीय क्षेत्रों में बाढ़ और कटाव की समस्या बढ़ रही है।

इन चुनौतियों से निपटने के लिए सख्त पर्यावरणीय कानून, अंतरराष्ट्रीय सहयोग और जन-जागरूकता आवश्यक है। समुद्री संरक्षित क्षेत्रों (Marine Protected Areas) का विस्तार जैव विविधता की रक्षा में सहायक हो सकता है।

तटीय समुदाय और सामाजिक समावेशन

ब्लू इकोनॉमी केवल बड़े उद्योगों तक सीमित नहीं होनी चाहिए। तटीय समुदाय—विशेषकर मछुआरे, कारीगर और छोटे व्यापारी—इस अर्थव्यवस्था के मूल स्तंभ हैं।

उन्हें प्रशिक्षण, वित्तीय सहायता, बीमा और आधुनिक उपकरण प्रदान कर सशक्त बनाया जाना चाहिए। महिलाओं की भागीदारी भी इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण है—विशेषकर मत्स्य प्रसंस्करण और विपणन में।

यदि विकास की धारा में स्थानीय समुदायों को शामिल नहीं किया गया, तो



ब्लू इकोनॉमी का उद्देश्य अधूरा रह जाएगा।

प्रौद्योगिकी, अनुसंधान और नवाचार

समुद्री संसाधनों के प्रभावी प्रबंधन के लिए आधुनिक तकनीक आवश्यक है। उपग्रह निगरानी, ड्रोन तकनीक, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और डेटा विश्लेषण समुद्री गतिविधियों की निगरानी और संरक्षण में सहायक हो सकते हैं।

विश्वविद्यालयों और अनुसंधान संस्थानों को समुद्री विज्ञान, महासागर अध्ययन और जैव-प्रौद्योगिकी में शोध को प्रोत्साहित करना चाहिए। स्टार्टअप संस्कृति समुद्री अपशिष्ट प्रबंधन, स्मार्ट फिशिंग और हरित बंदरगाह मॉडल जैसे क्षेत्रों में नवाचार ला सकती है।

वैश्विक सहयोग और भारत की भूमिका

हिंद महासागर क्षेत्र में भारत की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। क्षेत्रीय सहयोग, समुद्री सुरक्षा और पर्यावरण संरक्षण के लिए बहुपक्षीय समझौते आवश्यक हैं।

भारत “सागर” (Security and Growth for All in the Region) की नीति के माध्यम से क्षेत्रीय साझेदारी को सुदृढ़ कर रहा है। यह नीति समुद्री सुरक्षा और आर्थिक विकास दोनों को संतुलित करती है।

भविष्य की दिशा

ब्लू इकोनॉमी भारत के लिए आर्थिक विकास का नया अध्याय खोल सकती है। यदि सही नीति, निवेश और सामुदायिक सहभागिता के साथ इसे लागू किया जाए, तो यह करोड़ों लोगों के जीवन स्तर को सुधार सकती है।

परंतु यह याद रखना आवश्यक है कि समुद्र असीमित नहीं हैं। उनकी सहनशीलता की भी सीमा है। अतः विकास और संरक्षण के बीच संतुलन ही सफलता की कुंजी है।

ब्लू इकोनॉमी 21वीं सदी की वह विकास-दृष्टि है जो समुद्र को केवल संसाधन नहीं, बल्कि जीवन और संतुलन का आधार मानती है। यह आर्थिक समृद्धि, सामाजिक समावेशन और पर्यावरणीय संरक्षण—तीनों का समन्वय है।

भारत के पास विशाल तटीय क्षेत्र, युवा जनसंख्या और तकनीकी क्षमता है। यदि इन सभी को एकीकृत कर समुद्री संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग

किया जाए, तो भारत वैश्विक ब्लू इकोनॉमी में अग्रणी भूमिका निभा सकता है।

समुद्र की लहरें हमें यह संदेश देती हैं कि परिवर्तन अनिवार्य है, परंतु संतुलन आवश्यक है। ब्लू इकोनॉमी उसी संतुलन का मार्ग है—जहाँ विकास की धारा प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करती है।

केरल की “ब्लू टाइड” घटना: सुंदरता के पीछे छिपी चेतावनी

हाल के वर्षों में केरल के कुछ तटीय क्षेत्रों—विशेषकर कोल्लम और तिरुवनंतपुरम—में “ब्लू टाइड” या नीली चमक की घटनाएँ देखी गईं। रात के समय समुद्र की लहरों में नीली रोशनी-सी चमक दिखाई देती है, जो पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र बन जाती है।

यह घटना समुद्री जल में सूक्ष्म जीवों, विशेषकर डाइनोफ्लैजिलेट्स नामक प्लवकों की अत्यधिक वृद्धि (Algal Bloom) के कारण होती है। लहरों की हलचल से उत्पन्न जैव-दीप्ति (Bioluminescence) समुद्र को नीले प्रकाश से चमका देती है। हालाँकि यह दृश्य मनोहारी है, परंतु इसके पीछे पर्यावरणीय असंतुलन छिपा होता है। समुद्र में नाइट्रोजन और फॉस्फोरस जैसे पोषक तत्वों की अधिकता—जो कृषि अपवाह, औद्योगिक अपशिष्ट और शहरी सीवेज से आती है—शैवाल की अनियंत्रित वृद्धि को बढ़ावा देती है।

कई बार यह स्थिति समुद्र में ऑक्सीजन की कमी उत्पन्न कर देती है, जिससे मछलियों और अन्य समुद्री जीवों की मृत्यु हो सकती है। इसका सीधा प्रभाव मत्स्य उद्योग और स्थानीय मछुआरों की आजीविका पर पड़ता है।

केरल की यह घटना हमें स्पष्ट संदेश देती है कि यदि समुद्री पारिस्थितिकी का संतुलन बिगड़ा, तो उसके दुष्परिणाम आर्थिक और सामाजिक दोनों होंगे। ब्लू इकोनॉमी का उद्देश्य ही ऐसी परिस्थितियों को रोकना है—जहाँ विकास हो, परंतु प्रकृति सुरक्षित रहे।

यदि हम समुद्र को सम्मान और संवेदनशीलता के साथ अपनाएँगे, तभी उसकी नीली समृद्धि आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रह सकेगी। यही ब्लू इकोनॉमी का सार और संदेश है।



फोटोग्राफ अलेप्पी (अलाप्पुझा), केरल



प्रकृति और हमारा रिश्ता

प्रकृति को समझने के लिए हमें ईमानदार,
एकाग्र और जिम्मेदार होना आवश्यक है
लेकिन हकीकत तो यह है कि हमारा प्रकृति को
लेकर रिश्ता दिनोंदिन कमजोर होता जा रहा है।

—प्रकृति दर्शन, मासिक पत्रिका





न्यू सेंस मार्केटिंग सर्विसेज प्रा. लि.

🌐 www.newsensepvtltd.com 📞 Mobile : 9411229553

आपके सपनों को पहचान दिलाने का हमारा वादा !
————— (एक ही स्थान पर सभी समाधान) —————



ई-बुक पब्लिशिंग सेवाएँ

- ✓ फ्री ISBN आवंटन
- ✓ डिजिटल पब्लिशिंग एवं वैश्विक पहुँच
- ✓ लेखक प्रमोशन एवं ब्रांडिंग



RNI पंजीकरण परामर्श

- ✓ अखबार / पत्रिका शुरू करने के लिए संपूर्ण मार्गदर्शन।



कस्टमाइज़्ड NGO & ट्रस्ट डीड कंसल्टिंग — 3 आकर्षक योजनाएँ

• बेसिक प्लान

- ✓ स्टैंडर्ड ट्रस्ट डीड ड्राफ्ट
- ✓ लीगल कंप्लायंस गाइडेंस

• प्रो प्लान

- ✓ चर्चा के बाद कस्टमाइज़्ड ट्रस्ट डीड
- ✓ फ्री PAN कार्ड पंजीकरण
- ✓ फ्री नीति आयोग पंजीकरण

• प्रीमियम प्लान

प्रो प्लान की सभी सेवाएँ और प्रीमियम प्लान के साथ अतिरिक्त मुफ्त सेवाएँ निम्नलिखित हैं :

1. 12AA पंजीकरण परामर्श व फाइलिंग।
2. आयुष मंत्रालय परामर्श और एनजीओ/ट्रस्ट का पंजीकरण सपोर्ट सर्विस।
3. एनजीओ/ट्रस्ट का सामाजिक न्याय और सशक्तिकरण मंत्रालय में पंजीकरण पर परामर्श और सपोर्ट सर्विस।

प्रदूषण बढ़ा, लेकिन बजट कम हो गया

आज के समय में प्रदूषण केवल एक पर्यावरणीय समस्या नहीं रह गया है, यह स्वास्थ्य, अर्थव्यवस्था और भविष्य से जुड़ी गंभीर संकट बन गई है। हवा में विषाक्त कणों, पानी में रासायनिक गंदगी और मिट्टी में प्लास्टिक पर औद्योगिक भ्रष्टाचार ये सभी मिलकर जीवन की गुणवत्ता को कम कर रहे हैं। लेकिन दुख की बात यह है कि जब प्रदूषण का स्तर बढ़ रहा है, तो इसे रोकने के लिए निर्धारित बजट घटता जा रहा है।

शहरों में वाहनों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। कारखानों का धुआं, निर्माण कार्यों की धूल और खुले में कचरा जलाने की प्रथा हवा को विषाक्त बना रही है। गांवों में भी कीटनाशकों और रासायनिक उर्वरकों के अत्यधिक उपयोग से पानी और मिट्टी प्रदूषित हो रही है। इस स्थिति में सरकारों से अपेक्षा की जाती है कि वे पर्यावरण संरक्षण पर अधिक ध्यान दें और बड़ा बजट रखें।

लेकिन यदि पर्यावरण विभागों के लिए धन कम कर दिया जाता है, तो निगरानी प्रणालियां कमजोर हो जाती हैं। प्रदूषण मापने वाले स्टेशनों की संख्या कम हो जाती है, सफाई अभियान अधूरे रह जाते हैं और जागरूकता कार्यक्रमों को पर्याप्त सहयोग नहीं मिलता। इसका परिणाम यह होता है कि कानून मौजूद होने के बावजूद उनका उचित तरीके से पालन नहीं किया जा सकता।

प्रदूषण न केवल प्रकृति को, बल्कि मानव स्वास्थ्य को भी बुरी तरह प्रभावित करता है। श्वसन रोग, हृदय रोग और त्वचा संबंधी समस्याएं

बढ़ रही हैं। उपचार पर खर्च बढ़ता है, जिससे आर्थिक बोझ भी बढ़ जाता है। यदि पर्यावरण संरक्षण के लिए बजट में कटौती की जाती है, तो दीर्घावधि में स्वास्थ्य क्षेत्र पर होने वाला खर्च कई गुना हो सकता है।

इस समस्या का समाधान न केवल सरकारी बजट से, बल्कि साझा जिम्मेदारी से भी संभव है। सरकार को पर्यावरण संरक्षण के लिए उचित धनराशि उपलब्ध करानी चाहिए, सख्त निगरानी करनी चाहिए और हरित प्रौद्योगिकी को प्रोत्साहन देना चाहिए। साथ ही, नागरिकों को अपनी जिम्मेदारी निभानी चाहिए जैसे कि प्लास्टिक का उपयोग कम करना, पौधे लगाना और जनता का उपयोग करना।

अंत में, वायु प्रदूषण बढ़ गया, लेकिन बजट कम हुआ। यह एक चिंताजनक वास्तविकता है। यदि हम आज पर्यावरण में निवेश नहीं करते हैं, तो भविष्य में इसकी कीमत कई गुना अधिक चुकानी पड़ेगी। स्वच्छ हवा, शुद्ध जल और स्वस्थ पृथ्वी न केवल हमारा अधिकार है, बल्कि हमारी जिम्मेदारी भी है।



डॉ. विजय गर्ग

सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य

शैक्षिक स्तंभकार मलोट पंजाब



Image Credit by Elle-photoart: <https://www.pexels.com>





"अंतिम दृश्य..."

हम परियोजना बनाते हैं
हम योजनाओं में जीवित हैं
हम सपनों में आश्रित हैं
सपनों में रम जाते हैं
थम जाते हैं
और... स्वयं को
स्थायी समझने लगते हैं... !
लेकिन...,
एक दिन मृत्यु
आकर समझा जाता है
सब कुछ उधार का है
अपना कुछ भी नहीं है...,
समय भी... !
संबंध भी... !!
सांस भी... !!!
शायद... ! जीवन
सच में काल्पनिक है
क्योंकि...,
इसका अंतिम दृश्य
हम नहीं लिखते हैं... !
परन्तु...,
जब तक
पर्दा नहीं गिर जाती
उस काल्पनिक कथा को
अर्थपूर्ण बनाने की
जिम्मेदारी तो
हमारा ही है... !



मनोज शाह मानस
नई दिल्ली



Image Credit by <https://stock.adobe.com/in>



Your Digital Growth, Our Strategic Mission

www.brandmeeonline.com | +91 - 9958837397

Empowering Your Digital Growth



News & NGO Websites

Professional & Donation-Enabled Sites



Email Automation & Marketing

Automated Campaigns & Funnels



Meta Ads

Targeted Facebook & Instagram Ads



Organic Social Media Growth

Instagram | Facebook | LinkedIn



YouTube Growth Strategy

SEO & Channel Optimization



LinkedIn Growth

Professional Brand Building

Why Choose BrandMee Online?



Strategic Approach



Automation Experts



Conversion Focused



Industry Specific



Transparent Process

Who We Work With:



Businesses & Startups



NGOs & Foundations



Media & News Platforms



Coaches & Consultants



Personal Brands

Let's Build Your Digital Growth System!



Call / WhatsApp: +91 - 9958837397

Visit: www.brandmeeonline.com

Where Visibility Turns Into **Authority**,
and Authority Turns Into **Growth**.



प्रकृति दर्शन

प्रकृति एवं पर्यावरण पत्रिका

मई 2026 अंक के विषय

अंतर्राष्ट्रीय तेंदुआ दिवस- 3 मई

विश्व प्रवासी पक्षी दिवस-9 मई

लुप्तप्राय प्रजाति दिवस- 19 मई

विश्व मधुमक्खी दिवस-20 मई

जैविक विविधता के लिए अंतर्राष्ट्रीय
दिवस-22 मई

विश्व कछुआ दिवस-23 मई

विश्व ऊदबिलाव दिवस-31 मई

मई माह के लिए आर्टिकल, शोध, रचनाएं उपलब्ध
कराने की अंतिम तिथि- 21 अप्रैल 2026

आर्टिकल ईमेल अथवा व्हाट्सऐप पर उपलब्ध करवाए जा सकते हैं

Email- editorpd17@gmail.com, WhatsApp- 8191903651

Website- www.prakritidarshan.com



प्रकृति दर्शन

प्रकृति एवं पर्यावरण पत्रिका

जून 2026 अंक के विषय

विश्व पर्यावरण दिवस- 5 जून

-ये बेहद महत्वपूर्ण दिवस है, इस दिन कई विषयों पर लिखा जा सकता है, पर्यावरण संरक्षण पर स्टोरी, शोध और आलेख आमंत्रित हैं।

विश्व महासागर दिवस- 8 जून

महासागर अनेक संकटों से जूझ रहा है, महासागर मौसम परिवर्तन में प्रमुख भूमिका निभाते हैं लेकिन प्रदूषण झेल रहे हैं, लेखन के लिए महत्वपूर्ण विषय है।

वैश्विक पवन दिवस- 15 जून

यह भी एक बेहद महत्वपूर्ण दिवस है और इस दिशा में भी कार्य हो रहा है, हम इसे लेकर शानदार स्टोरी कर सकते हैं।

मरुस्थलीकरण और सूखे से निपटने
का विश्व दिवस- 17 जून

सूखा और मरुस्थलीकरण दोनों ही महासंकट हैं, वैश्विक चिंता भी हैं। इस विषय पर भी लिखने को बहुत से एंगल हैं, खूब लिखा जा सकता है।

जून माह के लिए आर्टिकल, शोध, रचनाएं उपलब्ध
कराने की अंतिम तिथि- 23 अप्रैल 2026

आर्टिकल ईमेल अथवा व्हाटसऐप पर उपलब्ध करवाए जा सकते हैं

Email- editorpd17@gmail.com, WhatsApp- 8191903651

Website- www.prakritidarshan.com



आयुष्मान भारत

प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना

70 वर्ष और उससे अधिक आयु के



सभी वरिष्ठ नागरिकों को मिल रहा वय वंदना योजना का लाभ



योजना की विशेषताएं

- सूचीबद्ध सरकारी और निजी अस्पतालों में ₹5 लाख तक का निःशुल्क उपचार
- मौजूदा बीमारियों का कवरेज पहले दिन से लागू
- 70 वर्ष या उससे अधिक आयु के बुजुर्ग, जिनके पास पहले से कोई निजी बीमा है, वे भी पात्र होंगे
- 70 वर्ष या उससे अधिक आयु के राज्य बीमा योजना (ESIC) के लाभार्थी भी पात्र होंगे

कैसे बनवाएं आयुष्मान वय वंदना कार्ड?

प्ले स्टोर से
आयुष्मान ऐप
डाउनलोड करें

मोबाइल नंबर से
लॉगिन करें

सभी आवश्यक
जानकारी भरें
और e-KYC करें

अपना कार्ड
डाउनलोड करें

आवश्यक दस्तावेज



आधार कार्ड और उससे लिंक मोबाइल नंबर

पात्रता के मापदंड



लाभार्थी की आयु 70 वर्ष या
उससे अधिक होना अनिवार्य है



आयु का सत्यापन आधार
e-KYC के माध्यम से ही पूरा होगा



आयुष्मान भारत योजना के अंतर्गत
15 जनवरी से 15 अप्रैल, 2026 तक विशेष अभियान

इस दौरान अपने नजदीकी कैंप पर जाकर आयुष्मान कार्ड बनवाएं

सूचीबद्ध अस्पतालों की सूची जानने के लिए QR कोड स्कैन करें



अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें : 1800-1800-4444/14555

कार्यालय का पता

दूसरी और चौथी मंजिल, नवचेतना केंद्र, 10 अशोक मार्ग, हजरतगंज, लखनऊ, उत्तर प्रदेश-226001

अब इंटरनेट पर किस बात का,
आज ही ऐप डाउनलोड कर बनवाएं

आयुष्मान वय वंदना कार्ड



सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

UPGovtOfficial

CMOUttarpradesh

CMOfficeUP

अदभुत है प्रकृति, गजब फोटोग्राफी

प्रकृति अदभुत है इसे महसूस करने का अपना आनंद है। जल, धरा, आसमान और इनके बीच पक्षियों का सौंदर्य। पक्षियों को देखना हमें अक्सर आनंद से भर देता है।



फोटोग्राफ-
बंशीलाल परमार
सुवासरा, मंदसौर, मप्र,
वरिष्ठ फोटोग्राफर





फूलों पर पानी की बूंदें



फोटोग्राफ
डॉ. अनिता कृष्णा

फूलों के रंग हमें अपनी ओर हमेशा ही आकर्षित करते हैं लेकिन यदि फूलों पर पानी की बूंदें हों और उन पर मोती की तरह चमक रही हों तो हम आनंद से भर उठता है।





NEWSENSE

MARKETING SERVICES PRIVATE LIMITED

Consulting. Media. Education. Growth.

Empowering NGOs in 2026

Start Your NGO Ownership & Transform Your Impact!



NGO Compliance & Consultancy Services

- ✓ **Full Support for NGO Registration:**
Trust, Society, Section 8 Registration
- ✓ **NITI Aayog Registration:**
Fast & free consulting to get your NITI Aayog Darpan ID
- ✓ **Achieve 80G & 12AA Compliance:**
Expert assistance to secure 12AA, 80G, FCRA, & CSR-1 Status
- ✓ **End-to-End Assistance:**
For Trust/Society Formation, Documentation & Compliance



Let's Build Your NGO's Future – Contact Us Today!



Call or WhatsApp for Consultation: **+91 94112 29553**



www.newsensepvtltd.com



+91 94112 29553



consulting@newsensepvtltd.com

इनसे सीखना चाहिए

पक्षियों से भी हम सीख सकते हैं, वे लक्ष्य निर्धारित करते हैं, अपनी शक्ति का परीक्षण करते हैं कितनी दूरी तक जाना है फिर कब ठहरना है और कहां ठहरना है। पक्षियों की अपनी समझ है लेकिन वे प्रकृति के नियमों के अनुसार अपना जीवन जीते हैं लेकिन हम मानव ऐसा नहीं करते...सीखना चाहिए हमें पक्षियों से।

फोटोग्राफ अखिल हार्डिया, इंदौर, मप्र



NEW SENSE MARKETING SERVICES PRIVATE LIMITED

www.newsensepvtltd.com | Email: consulting@newsensepvtltd.com

Contact No: 9411229553 & 9458634555

Your One-Stop Solution for Registrations & Digital Growth

**Start Your Newspaper, Magazine, NGO,
or News Website - Fast & Affordable!**

- ✓ RNI/PRGI Registration (Newspaper & Magazine)
- ✓ NGO Registration & Income Tax (12AA and 80G)
- ✓ NITI AAYOG Registration
- ✓ AYUSH Ministry Registration
- ✓ Samajik Nyay Evam Adhikarita
Mantralay Registration
- ✓ ISO Certification
- ✓ News & NGO Website Development



All services from Moradabad



Affordable | Reliable | Quick Support

➡ Turn your vision into reality-Contact us today!